वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
1989-90

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिस में सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उस के लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्व बंधुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परंपरा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है जिस में शामिल हैं – लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं, और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संस्थापन केन्द्र के रूप में कार्य करना;

3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए एक क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना;

2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना;

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परंपरागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद/ विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना;

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके जो अकसर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति जिसमें परंपरागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है;

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

संकल्पना

श्रीमती इन्दिरा गांधी की स्मृति में स्थापित इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जिस में सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक अलग अस्तित्व रखते हुए भी पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में, प्रकृति, सामाजिक संरचना और ब्रह्मांड व्यवस्था के साथ पारस्परिक रूप से संबद्ध हो।

कलाओं के विषय में यह दृष्टिकोण जो मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखंड रूप से जुड़ा है, और उस के लिए आवश्यक भी है, श्रीमती गांधी की इस मान्यता पर आधारित है कि कलाओं की भूमिका मनुष्य के लिए व्यक्तिगत रूप में तथा एक सामाजिक प्राणी के रूप में उसके अंतरंग गुणों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह दृष्टिकोण सम्पूर्ण विश्व को एक समझने की (विश्व बंधुत्व) एवं विश्व की अखंडता की भावना (वसुधैव कुटुम्बकम्) में समाविष्ट है जो भारतीय परंपरा में सर्वत्र मुखरित है और जिस पर महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे आधुनिक भारतीय मनीषियों ने भी बल दिया है।

यहां कलाओं के क्षेत्र को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है जिस में शामिल हैं – लिखित तथा मौखिक रूप में उपलब्ध सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्रकला से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएं, अपने अधिक से अधिक व्यापक अर्थों में संगीत, नृत्य, नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाएं, और मेलों, उत्सवों तथा जीवन शैली में उपलब्ध वह सब कुछ जो किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारंभ में केन्द्र अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित करेगा, लेकिन आगे चलकर वह अपना क्षेत्र अन्य सभ्यताओं तथा संस्कृतियों तक बढ़ा लेगा। अनुसंधान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सर्जनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगा। अपने समस्त कार्य में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक तथा अंतर्विषयक दोनों प्रकार का होगा। केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. कलाओं, विशेषकर लिखित, मौखिक और दृश्य स्रोत सामग्री के प्रमुख संस्थापन केन्द्र के रूप में कार्य करना;

3. सुव्यवस्थित रूप से वैज्ञानिक अध्ययनों और सजीव प्रदर्शनों का आयोजन करने के लिए एक क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय और लोक कला प्रभाग स्थापित करना;

2. कला, मानविकी और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों के अनुसंधान और प्रकाशन के कार्यक्रम हाथ में लेना;

4. प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से विविध परंपरागत तथा समकालीन कलाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सर्जनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद/ विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना;

5. दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना, ताकि बौद्धिक समझ-बूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके जो अकसर एक तरफ आधुनिक विज्ञानों और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति जिसमें परंपरागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है;

6. भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन के लिए माडल तैयार करना;
7. विविध सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक तथा गतिशील तत्वों को स्पष्ट करना;
8. भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देना;
9. कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार साधनों का विकास करना और कला, मानविकी और सांस्कृतिक परोहर के संबंध में अनुसंधान कार्य करने और उन को मान्यता प्रदान करने के लिए भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों और अन्य उच्च शिक्षा संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं में अन्योन्याश्रय और कलाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के बीच अन्योन्याश्रय संबंध, विभिन्न क्षेत्रों के बीच परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण और शहरी तथा लिखित एवं मौखिक पांपराओं के बीच पारस्परिक संबंधों का पता लगाया जाएगा और उनको अभिलिखित तथा प्रस्तुत किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय कला विभाग के संकल्प संख्या एफ. 16-7/86- कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसरण में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास को नई दिल्ली में दिनांक 24 मार्च, 1987 को विधिवत् गठित व पंजीकृत किया गया था।

वर्ष 1989-90 के दौरान निम्नलिखित व्यक्ति इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के न्यासी (ट्रस्टी) रहे :-

1. श्री राजीव गांधी — न्यास अध्यक्ष
2. श्री आ. वेंकटरामन
3. श्री पी.वी. नरसिंहराव
4. वित्त मंत्री
   भारत सरकार (पदेन)
5. श्रीमती पुपुल जयकर
6. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद
7. श्रीमती एम.एस. सुब्बलक्ष्मी
8. श्री आबिद हुसैन
9. डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन — सदस्य सचिव, न्यास

भारत सरकार के दिनांक 19 मार्च, 1987 के संकल्प संख्या फा. 16-7/86-कला के द्वारा नियुक्त कार्यकारिणी समिति में निम्नलिखित सदस्य थे :

1. श्री पी.वी. नरसिंहराव — अध्यक्ष
   न्यास सदस्य

2. वित्त मंत्री
   भारत सरकार (पदेन)
   न्यास सदस्य

3. श्री एच.वाई. शारदा प्रसाद
   न्यास सदस्य

4. श्री आबिद हुसैन
   न्यास सदस्य

5. श्री पी.सी. एलेक्जेंडर
   पाईजारे पलक्कल
   मवेलिकारा, केरल

6. डा. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन — सदस्य सचिव न्यास

संगठन

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना में वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए और अपने प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र अपने पांच प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है जो संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त होते हुए भी कार्यक्रमों के आयोजन के मामले में परस्पर जुड़े हुए हैं।

इन्दिरा गांधी कला निधि : इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान के लिए प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए बहुविध संग्रहों से सुसज्जित एवं सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय है, जिसे संबल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषय तथा सांस्कृतिक परंपराओं (धरोहर) पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक, (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार तथा कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह और क्षेत्र अध्ययन व्यवस्था है।

इन्दिरा गांधी कला कोश : यह प्रभाग आधारभूत अनुसंधान कार्य करता है। यह दीर्घकालिक कार्यक्रम आरंभ करेगा, जिसमें (क) कला और शिल्प की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा बुनियादी तकनीकी शब्दों का संग्रह और अंतर्विषयक शब्दावलियां, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला (कलामूलशास्त्र) (ग) भारतीय कलाओं के विषय में समीक्षात्मक कृतियों के पुनर्मुद्रण की श्रृंखला (कला समालोचन), (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखंडीय विश्वकोश सम्मिलित होंगे।

इन्दिरा गांधी जनपद संपदा : यह प्रभाग (क) लोक तथा जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्री का संग्रह तथा प्रलेखन करेगा, (ख) बहुविध संचार माध्यमों के जरिए प्रस्तुति करेगा, (ग) जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए व्यवस्था करेगा जिससे कि समग्र भारतीय सांस्कृतिक दृश्य प्रपंच और पर्यावरणात्मक, पारिस्थितिक, कृषि विषयक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक माडल तैयार किए जा सकें, (घ) एक बाल रंगशाला, (ङ) एक प्रयोगात्मक रंगशाला, और (च) एक संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करेगा।

इन्दिरा गांधी कला दर्शन : कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अंतर्विषयक/अंतर्क्रियात्मक संगोष्ठियों एवं प्रदर्शनियों के लिए एक मंच की व्यवस्था करता है। इसके भवनों में तीन रंगशालाएं (थियेटर) और बड़ी दीर्घाएं होंगी।

तुलसा : अन्य सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता तथा सेवाएं प्रदान करता है।

संस्था के अकादमिक प्रभाग अर्थात् कला निधि तथा कला कोश अपना ध्यान प्रमुख रूप से बहुविध प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रह पर लगाएंगे, आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करेंगे, रूप के सिद्धांतों का पता लगाएंगे और पारिभाषिक शब्दावलियों को स्पष्ट करेंगे। वे यह कार्य सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) और निर्वचन मार्ग के स्तर पर करेंगे। जनपद संपदा और कला दर्शन प्रभाग लोक, देश तथा जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्य तथा जीवन शैली, मौखिक परंपराओं पर ध्यान देंगे। सभी चारों प्रभागों के कार्यक्रम सम्मिलित रूप से कलाओं को उनके जीवन तथा अन्य विषय संबंधी मूल संदर्भों में प्रस्तुत करेंगे।

प्रत्येक प्रभाग में अनुसंधान करने, कार्यक्रम बनाने और अंतिम निष्कर्ष निकालने की रीतियां एक जैसी हैं। हर प्रभाग का कार्य दूसरे प्रभागों के कार्यक्रमों का पूरक होगा।

वार्षिक रिपोर्ट
1989-90

कार्यकलाप

1 अप्रैल, 1989 से 31 मार्च, 1990 तक की अवधि के लिए रिपोर्ट :

केन्द्र के परस्पर संबद्ध कार्यक्रमों के साथ उसके प्रत्येक उप प्रभाग के सुपरिभाषित ढांचे का ब्यौरा 1989 की रिपोर्ट में दिया गया था। आलोच्य वर्ष के दौरान प्रत्येक कार्यक्रम और उप कार्यक्रम के अंतर्गत परियोजनाओं की रूपरेखा को ठोस परियोजनाओं का रूप दिया गया। अधिकांश कार्यक्रमों के लिए प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारंभ कर दी गई हैं। यह कार्य भारत तथा विदेशों में स्थित अन्य संस्थाओं के सहयोग से शुरू किया गया है। पुस्तकालय के कलेवर में महत्वपूर्ण वृद्धियां करने के अलावा एक माइक्रोफिल्म परियोजना तथा डेटाबेस के विकास में तेजी से प्रगति हुई है। भारत तथा विदेशों में स्थित बड़ी-बड़ी संस्थाओं के साथ सहयोग संबंध जोड़े गए हैं। बहुमाध्यमिक विस्तृत डेटाबेस रखने वाली संस्थाओं के विशेषज्ञ केन्द्र में पधारे और उन्होंने बहुमूल्य परामर्श दिया। केन्द्र के शब्दकोशों, द्विभाषी रूप में प्रकाशित पारिभाषिक आधारभूत ग्रंथों तथा समालोचनात्मक निबंध ग्रंथों से संबंधित प्रकाशन कार्यक्रम के अंतर्गत निकाले गए पहले प्रकाशनों का विद्वानों द्वारा उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। कलातत्वकोश खंड I की भारत तथा विदेशों में व्यापक रूप से समीक्षा की गई। कलामूलशास्त्र के प्रति भी यूरोप, यूनाइटेड किंगडम तथा सोवियत रूस के प्राच्य अध्ययन केन्द्रों में रुचि बढ़ी। आनंद कुमार स्वामी के सर्वसंग्रह ग्रंथों की परियोजना का विश्व में सर्वत्र अभिनंदन हुआ, और विश्व के सभी भागों के प्रतिष्ठित विद्वान इस कार्यक्रम में सहयोजित किए गए। यूनेस्को ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की महत्वपूर्ण भूमिका की मान्यता दी है और इसके कला विश्वकोश को समर्थन प्रदान किया।

जनपद संपदा प्रभाग द्वारा एक अतिविशिष्ट वैकल्पिक दृष्टिकोण के साथ जनजातीय तथा ग्रामीण समुदायों की जीवनशैलियों के अध्ययन का जो कार्यक्रम आरंभ किया गया है उसका उन सभी लोगों ने स्वागत किया है जो यह विश्वास

करते हैं कि भारतीय सांस्कृतिक घटनाचक्र और उसकी अभिव्यक्ति को समझने के लिए एक वैकल्पिक माडल का विकास न केवल इन समुदायों के अध्ययन एवं प्रलेखन के लिए अपितु विकास का वैकल्पिक माडल तैयार करने के लिए बहुत जरूरी है। अनेक आंतरिक कार्यशालाएं, संगोष्ठियां, परिचर्चाएं आयोजित की गईं जिनमें वैज्ञानिकों अर्थशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, कला इतिहासविदों और मानवशास्त्रियों ने भाग लिया और केन्द्र के सैद्धांतिक माडलों की प्रभावोत्पादकता को प्रमाणित किया। इन माडलों के आधार पर क्षेत्रगत अध्ययन चालू किए गए। इन माडलों के आधार पर प्रारंभ किए गए अनुसंधान अध्ययनों के परिणाम अगले कुछ वर्षों में दृष्टिगोचर होने की आशा है।

केन्द्र ने विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों एवं मानवविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं तथा विशेषज्ञों से अकादमिक संवाद सूत्र स्थापित किया है।

नवंबर 1990 में आयोजित की जाने वाली काल विषयक संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी की तैयारी के लिए विश्वस्तर पर संवाद प्रारंभ किया गया है। संगोष्ठी के विषय पत्र से ही अंतरिक्ष भौतिकी, रसायन, दर्शन, जीव विज्ञान, धर्म, समाजशास्त्र तथा कला इतिहास आदि क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तियों में बेहद रुचि उत्पन्न हुई है और उन्होंने उत्साहवर्धक एवं रचनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है। इस संगोष्ठी में तीन नोबल पुरस्कार विजेताओं के भाग लेने की आशा है जिसमें इलिया प्रिगोजाइन, जॉन हक्सली तथा परमभावन दलाई लामा शामिल होंगे।

यूनेस्को के गत 1989 के सम्मेलन में केन्द्र की ओर से छह संकल्प प्रस्तुत किए गए थे। अनेक देशों के उत्साहपूर्वक समर्थन के साथ ये सभी संकल्प महासम्मेलन द्वारा स्वीकार कर लिए गए।

प्रत्येक प्रभाग के कार्यक्रमों का ब्योरा नीचे दिया गया है :-

I. कला निधि

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय

(i) मुद्रित पुस्तकें

संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना और फरवरी 1989 में इसके औपचारिक उद्घाटन का उल्लेख गत वर्ष की रिपोर्ट में किया गया था। पुस्तकालय में विश्व कोशों, ग्रंथ सूचियों, प्रारंभिक ग्रंथों, दुर्लभ पुस्तकों और सुनीति कुमार चटर्जी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, जयदेव सिंह, कृष्ण कृपलानी एवं नर्सली एलिस हीरामानेक प्रभृति विख्यात विद्वानों के व्यक्तिगत संग्रह जैसी संदर्भ सामग्री संगृहीत है।

संदर्भ पुस्तकालय के अस्तित्व का पहला वर्ष फरवरी 1990 में पूरा हुआ। वर्ष 1989-90 के दौरान पुस्तकालय ने सभी कला रूपों, लोक साहित्य, इतिहास, पुरातत्व, धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य, मानवविज्ञान, मानव जाति विज्ञान आदि विषयों से संबंधित पुस्तकों, पत्रपत्रिकाओं, माइक्रोफिल्म व माइक्रोफिश, फोटोग्राफ, स्लाइडों, फिल्मों, श्रव्यदृश्य वस्तुओं आदि के संग्रह का काम जारी रखा।

संस्कृत, अरबी तथा फारसी भाषा की पांडुलिपियों के प्रमुख संग्रहों की माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश प्रतिलिपियों का संकलन करना भी संदर्भ पुस्तकालय की ही एक जिम्मेदारी है। उपयोगकर्ताओं को ग्रंथ सूची संबंधी सेवाएं प्रदान करने के लिए और भारत के तथा भारत से बाहर रहने वालों के साथ कंप्यूटरीकृत सूचना का आदान-प्रदान करने के लिए पुस्तकालय एक बहुमाध्यमिक डेटाबेस विकसित करता है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक एवं साहित्यिक धरोहर की रक्षा करने के लिए इस ने एक विशाल परियोजना हाथ में ली है जिसके अंतर्गत भारत स्थित प्रमुख संग्रहों में उपलब्ध पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार की जाएंगी और विदेश स्थित भारतीय पांडुलिपियों के संग्रहों से उनकी माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश प्रतियां प्राप्त की जाएंगी।

प्राप्त सामग्री

मुद्रित सामग्री

वर्ष के दौरान पुस्तकालय में 6000 खंड (ग्रंथ) जोड़े गए, जिनमें उपहारस्वरूप प्राप्त 1350 ग्रंथ भी शामिल हैं। दुर्लभ ग्रंथ प्राप्त करना इस संदर्भ पुस्तकालय की एक विशेषता है। इसने सत्रहवीं, आठरहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों की 20 से अधिक पुस्तकें अर्जित कीं। प्रबंध ग्रंथमालाएं प्राप्त करने के कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 400 नए ग्रंथ प्राप्त किए गए, जिनमें से 156 ग्रंथ पूना विश्वविद्यालय की संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथमाला के, 41 ग्रंथ हवाई विश्वविद्यालय के दक्षिणपूर्व एशियाई शोधपत्रों के और 201 ग्रंथ मद्रास सरकार की प्राच्य ग्रंथमाला के थे।

पुस्तकालय में लगभग 300 पत्रपत्रिकाएं मंगाई जाती हैं। इस वर्ष मंगाई गई कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाएं हैं : आर्टिबस एशियाई, दि इंडियन ऐंटिक्वैरी, आर्ट क्रिटिसिज्म, ब्रिटिश जर्नल ऑफ ऐस्थटिक्स, इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टरली, मार्ग, नटरंग, पुराणम्, स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर, इंडो-इरानिका आदि।

माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश

वर्ष के दौरान माइक्रोफिल्मों की 108 कुंडलियां (रोल) और माइक्रोफिशों की 3452 शीटें मंगाई गईं। इससे पुस्तकालय के पास कुंडलियों की कुल संख्या 2308 और शीटों की कुल संख्या 5000 हो गई। माइक्रोफार्म के रूप में प्राप्त वस्तुओं में 'ताते गैलरी आर्काइव्ज', 'वर्क्स ऑफ रशियन इंटेलिजेन्सिया', 'लेट्यैन्स ड्राइंग्स', ब्रिटिश लाइब्रेरी से मैकेंजी व जोनसन एवं होवसन के संग्रह तथा और बहुत से संग्रहों से प्राप्त सामग्री शामिल है। भारतीय पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मों की 20 कुंडलियां बिब्लियोथिक नेशनल, पेरिस से भी मंगवाई गई। विदेशों से पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश प्रतिलिपियां प्राप्त करने के दीर्घकालीन कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में, स्तास बिब्लियोथिक पी.के. (एस.बी.पी.के.) बर्लिन (पश्चिम) के पास उपलब्ध संस्कृत की पांडुलिपियों की प्रतियां प्राप्त करने के लिए इस वर्ष उनके साथ एक करार किया गया और उनसे भारतीय पांडुलिपियों की 431 माइक्रोफिश प्रतिलिपियां प्राप्त की गईं।

श्रव्यदृश्य तथा लेखाचित्रात्मक सामग्री

आलोच्य अवधि में ब्रिटिश लाइब्रेरी लंदन से 1191 स्लाइडें, स्टातिश म्यूजीन प्रॉशिशर कुलतुरबेसिटी बर्लिन से 526 फोटोग्राफ, एक 16 मि.मी. फिल्म, 205 वीडियो कैसेट, 30 ऑडियो कैसेट, 124 एलपी रेकार्ड प्राप्त किए गए। प्राप्त सामग्री में गगनेन्द्र नाथ टैगोर पर एक 16 मि.मी. का वृत्तचित्र, ला मेरी के फोटो अलबम और भारत उत्सव कार्यालय से प्राप्त फोटो अलबम एवं वीडियो ऑडियो रेकार्ड हैं।

माइक्रोफिल्म परियोजना

भारत में उपलब्ध पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में तैयार करने के संबंध में केन्द्र की महत्वाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत संदर्भ पुस्तकालय ने भारत में संस्कृत तथा प्राच्य पांडुलिपियों के बड़े-बड़े संग्रहों का पता लगाया। वर्ष के दौरान पुस्तकालय ने भारत में निम्नलिखित चुने हुए प्रमुख प्राच्य पुस्तकालयों में उपलब्ध पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में बनाने के पहले चरण का कार्य शुरू किया।

केरल

प्राच्य अनुसंधान संस्थान एवं पांडुलिपि पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेंद्रम

महाराष्ट्र

भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे

तमिलनाडु

गवर्नमेंट ओरिएंटल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, मद्रास

उत्तर प्रदेश

सारस्वती भवन लाइब्रेरी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

वर्ष के अंत तक पुस्तकालय में लगभग 6,50,000 हस्तलिखित पृष्ठों की 547 माइक्रोफिल्म कुंडलियां प्राप्त हो चुकी थीं। इसके अतिरिक्त कुल मिलाकर लगभग 28,000 पृष्ठों के 191 दुर्लभ ग्रंथों की माइक्रोफिल्में केन्द्र में ही तैयार की गईं।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत सरकार के विभिन्न सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का लाभ उठाते हुए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलानिधि प्रभाग ने अनेक विदेशी संस्थाओं से मौलिक सामग्री और पुस्तकों, सूचियों, चित्र पोस्टकार्डों तथा रंगीन स्लाइडों की अनुलिपियां प्राप्त कीं।

जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य से कला तथा कला के इतिहास और समकालीन भारतीय साहित्य पर 90 पुस्तकें प्राप्त हुई। भारत की प्राचीन तथा मध्यकालीन पांडुलिपियों की सूचियों के 37 खंड फ्रांस से प्राप्त हुए। मारग्रिट कोवाचा संग्रह की सूची हंगरी से प्राप्त हुई। मिस्रविद्या विषयक अनेक ग्रंथसूचियां बेल्जियम से प्राप्त हुईं। इंडोनेशिया की कला, पुरातत्व तथा संस्कृति पर 52 प्रकाशन इंडोनेशिया से प्राप्त हुए। यूट्रेट विश्वविद्यालय के पास उपलब्ध संस्कृत पांडुलिपियों की एक सूची तथा कुछ माइक्रोफिश प्रतिलिपियां नीदरलैंड से प्राप्त हुईं। यूगोस्लाविया के प्रमुख पुरातात्विक संग्रहालयों से 105 पुस्तकें तथा 216 रंगीन स्लाइडें प्राप्त हुईं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत प्राप्त वस्तुओं में उपर्युक्त सामग्री विशेष रूप से उल्लेखनीय थीं।

तकनीकी एवं कंप्यूटर कार्य

वर्ष के दौरान कुल मिलाकर 25,415 खंडों के संबंध में प्राप्ति संख्या दर्ज करने, उन को वर्गीकृत व सूचीबद्ध करने, डेटा इनपुट शीट भरने और उन्हें कंप्यूटर प्रणाली में दाखिल करने आदि का कार्य पूरा किया गया।

जिल्दबंदी : लगभग 8000 खंडों की जिल्दबंदी करवाई गई।

ग्रंथसूची : केन्द्र के विभिन्न प्रभागों की अनुसंधान परियोजनाओं में कार्यरत विद्वानों तथा अपने कर्मचारियों को सहायता देने के लिए 5000 पुस्तकों तथा लेखों के बारे में ग्रंथसूची संबंधी सूचना निम्नलिखित परियोजनाओं के संबंध में संकलित की गई :-

ब्रजनाथ द्वारा ग्रंथसूची

संघाल साहित्य की खोज

सुलेख साहित्य की खोज

गुक्कुवर ग्रंथसूची

बृहदीश्वर ग्रंथसूची

कठपुतली साहित्य की खोज

कार्यशालाएं, सम्मेलन आदि

तकनीकी कर्मचारियों की कार्यकुशलता के स्तर को ऊंचा करने के लिए और उनको आधुनिक संकल्पनाओं तथा प्रौद्योगिक विकास से अवगत कराने के लिए "माइक्रोग्राफिक्स" विषय पर उताह (अमेरिका) की जीनियोलोजिकल सोसाइटी द्वारा केन्द्र में 1 से 3 नवंबर, 1989 तक कार्यशाला का आयोजन किया गया। सोसाइटी के विशेषज्ञों ने केन्द्र द्वारा तैयार की गई माइक्रोग्राफिक सामग्री की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सदस्यता

संदर्भ पुस्तकालय की सदस्यता विद्वानों के लिए खोल दी गई, जिसके फलस्वरूप कुछ विद्वानों ने शुल्क देकर पुस्तकालय की सदस्यता ग्रहण की और उसमें उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करना शुरू कर दिया।

संस्थाओं की सदस्यता

केन्द्र के प्रतिनिधि के रूप में संदर्भ पुस्तकालय ने निम्नलिखित संस्थाओं की संस्थागत सदस्यता ग्रहण की :-

1. मेहर चैतन्य ट्रस्ट, तपेश्वरम्
   आंध्र प्रदेश
2. राष्ट्रीय नृत्य अनुसंधान केन्द्र
   (नेशनल रिसर्च सेंटर फार डान्स)
   सरे विश्वविद्यालय,
   यूनाइटेड किंगडम
3. अन्तर्राष्ट्रीय लेखक संघ
   स्विट्जरलैंड

पुस्तकालय भारत तथा विदेशों के बड़े-बड़े पुस्तकालयों के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग रखता है। उनमें से कुछ हैं : राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता; ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन; स्टासबिब्लियोथिक पी.के., बर्लिन (पश्चिम); बिब्लियोथिक नेशनल, पेरिस।

सुविधाएं तथा सेवाएं

संदर्भ पुस्तकालय का उपयोग करने वाले व्यक्तियों को निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिए आधारभूत सुविधाएं विकसित की गई हैं :-

1. पुस्तकों, पत्रिकाओं, आदि का कुछ समय के लिए अंतर पुस्तकालयिक आदान-प्रदान।
2. जीरोक्स प्रतियां तैयार करना।
3. माइक्रोफिल्म/माइक्रोफिश पढ़ना तथा फोटो प्रति तैयार करना।
4. कंप्यूटरीकृत सूची।

आगुंतक महानुभाव

आलोच्य वर्ष के दौरान संदर्भ पुस्तकालय में कई विशिष्ट व्यक्ति एवं विख्यात विद्वान पधारे। उनमें कुछ थे : महामहिम डा. ईद बगस मंत्र (भारत में इंडोनेशिया के राजदूत), श्री गाओ चिन (संस्कृति मंत्रालय, चीनी लोक गणराज्य), श्री मैथियस डरपिजल (यूनेस्को), महामहिम डा. नियाज ए. नायक (भारत में पाकिस्तान के राजदूत), डा. लक्ष्मण शास्त्री जोशी (प्राज्ञ पाठशाला, वाइ), श्री निखिल चक्रवर्ती (संपादक, मैनस्ट्रीम), श्री मुल्कराज आनंद और महामहिम श्री जोन फीक्स (भारत में आस्ट्रेलिया के राजदूत)।

कार्यक्रम ख : राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक

कला निधि (ख) प्रभाग की मुख्य जिम्मेदारी है : अन्य सभी प्रभागों की कंप्यूटीकरण संबंधी आवश्यकताओं का पता लगाना, डेटा का विश्लेषण करना, सूचना प्रणाली का डिजाइन विकास करना, कंप्यूटर प्रणाली का रखरखाव व उसे चालू रखना और कलाओं, मानविकी विषयों एवं भारत की सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक स्थापित करने के लिए उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित करना। केन्द्रीय संदर्भ स्थल के रूप में यह सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक बहुविध संग्रह तथा पुनः प्राप्ति की प्रणालियों के माध्यम से कलाओं तथा सांस्कृतिक धरोहर के सभी पक्षों पर सूचना उपलब्ध कराएगा। यह प्रत्येक प्रभाग तथा भारत एवं विदेश में स्थित सभी संयोजित संस्थाओं के कार्यक्रमों को संबल प्रदान करेगा और तत्संबंधी अनुसंधान तथा विकास कार्य हाथ में लेगा। राष्ट्रीय सूचना केन्द्र को इस प्रभाग का सर्वोपरि दायित्व सौंपा गया है।

इसके कार्यक्रम आगे इस प्रकार विभाजित है :

1. डेटाबेस का विकास।
2. उपलब्ध हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर का सर्वेक्षण।
3. कलाओं और मानविकी विषयों पर राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिए नोडल एजेंसी का विकास।
4. अनुसंधान तथा विकास की परियोजनाएं।
5. जनशक्ति प्रशिक्षण।

1. डेटाबेस का विकास

सूचियों की संघ सूची (कैट कैट) :

इस डेटाबेस से प्रकाशित/अप्रकाशित पांडुलिपियों की हजारों सूचियों (कैटालॉग) के बारे में जानकारी मिलती है। 900 सूचियों के बारे में जानकारी कंप्यूटर में भर ली गई है। प्रकाशित/अप्रकाशित सामग्री से संबंधित विषयों पर डेटा अब नाम, सूची, भारत या विदेशों के पांडुलिपि संग्रहों के अनुसार प्राप्त किए जा सकते हैं। डेटाबेस को अद्यतन बनाने के लिए अन्य 500 सूचियों की छानबीन (स्कैनिंग) का काम इस वर्ष पूरा किया गया।

पांडुलिपियां (मैनुस) :

गीतगोविन्द, मेघदूत और नाट्यशास्त्र को लगभग 300 पांडुलिपियों के बारे में संपूर्ण वर्णनात्मक सूचना प्रायोगिक आधार पर कंप्यूटरीकृत की जा चुकी है, इससे विभिन्न लिपियों में उपलब्ध पाठों के एक समान रूप तथा टीकाओं के भिन्न रूप का पता चलता है।

निर्धारित किए गए संस्कृत के 84 आधारभूत ग्रंथों की सभी उपलब्ध पांडुलिपियों के बारे में वर्णनात्मक सूचना कंप्यूटीकृत की जा रही है जो कलाकोश आधारभूत ग्रंथ श्रृंखला की योजना के अंतर्गत तैयार किए जाने वाले समीक्षात्मक संस्करणों के लिए पांडुलिपियों का पाठ-भेद दर्शाने हेतु आधार का काम देगी।

ध्वनि रेकार्ड (साउंड)

इसमें कर्नाटक संगीत के नटराजन संग्रह, (सामवेद की राणायणीय तथा जैमिनीय शाखा और अथर्ववेद की पैपलाद शाखा आदि के) वैदिक मंत्रों के सस्वर पाठ और संगीत वाद्यों पर एस. कृष्णस्वामी के संग्रह के बारे में सूचना शामिल है। पूर्वी भारत में ईसाइयों के भक्ति संगीत के संबंध में डेटा दर्ज/संशोधित करने का कार्य प्रगति पर है।

कलाकोश पारिभाषिक शब्द (केकेटर्म) :

कलातत्वकोश की परियोजना के लिए डेटाबेस विकसित कर लिया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत कलातत्वकोश में शामिल करने के लिए 250 पारिभाषिक शब्द छांटे गए हैं। वर्ष के दौरान रोमन तथा देवनागरी लिपियों में 5000 अभिलेख दर्ज किए गए हैं। इससे अध्येताओं को प्रत्येक पारिभाषिक शब्द के लिए पाठ/ग्रंथ संबंधी व्यापक संदर्भ तैयार करने और भिन्न-भिन्न पाठों/ग्रंथों में उद्धरणों तथा पारिभाषिक शब्दों के प्रतिसंदर्भों तथा ग्रंथसूची संबंधी संदर्भों को सत्यापित करने में सहायता मिलेगी। उदाहरण के लिए, ललितम् ग्रंथ के श्लोकों का संदर्भ देते हुए उसके पारिभाषिक शब्दों के सूचकों की मुद्रित प्रतियां तैयार की गईं।

पुस्तकालय प्रबंध सूचना प्रणाली (लमिस)

इसमें केन्द्र के पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पुस्तकों तथा पत्रपत्रिकाओं के बारे में सूचना को सूचीबद्ध करने का काम शामिल है। लगभग 30,000 पुस्तकों से संकलित सूचना को कंप्यूटरबद्ध कर लिया गया है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत तैयार की गई ग्रंथसूचियों से संबंधित सूचना को भी कंप्यूटर में भर लिया गया है।

कोश का निर्माण (थिस)

यह परियोजना जनपद संपदा प्रभाग के लोक परंपरा अनुभाग में कार्यान्वित की जा रही है। प्रारंभ में लोक परंपरा की प्रत्येक परियोजना बहुभाषी ग्रंथसूची, भौतिक पर्यावरण, मानचित्र कला आदि मापदंडों (माइयूत) में उप- विभाजित की जाएगी। इन माइयूतों के अलावा, अन्य माइयूल कोश के निर्माण - जल, अग्नि, आकाश, वायु तथा पृथ्वी, शरीर, सगोत्रता, मानवीय पारिस्थितिकी, जीवन-निर्वाह आदि और इनमें प्रत्येक से संबंधित कर्मकांडों के संदर्भ में शब्दावलियों के संकलन पर आधारित होंगे।

2. हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर

इस समय, निम्नलिखित हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर केन्द्र में उपलब्ध है :

हार्डवेयर

1. एच.पी. 3000/42 प्रणाली, 3 एम.बी. मुख्य मेमरी सहित, 2×132 एम.बी. डिस्क क्षमता, एक 1600 बी.पी.आई. 9-ट्रैक टेप ड्राइव और एक 300 आई.एम.पी. लाइनप्रिंटर 7 टर्मिनलों के साथ।
2. एच.पी. 150 पी.सी. टचस्क्रीन सहित कलरप्रो प्लॉटर, डिजिटियर तथा एक प्रिंटर।
3. दो सुपर पी.सी./ए.टी. (386 आधारित) 15 टर्मिनल सहित।
4. दो पी.सी./ए.टी. 40 एम.बी. तथा डॉटमैट्रिक्स प्रिंटर सहित।
5. पांच पी.सी./एक्स.टी. 20 एम.बी. विंचेस्टर डिस्क, डॉटमैट्रिक्स प्रिंटर सहित।
6. एक पी.सी./एक्स.टी. हायल-अप मॉडेम के माध्यम से डॉटमैट्रिक्स प्रिंटर सहित एन.ई.सी. एस-1000 प्रणाली से जुड़ा।
7. एक पी.सी./एक्स.टी. एच.पी. 3000 के टर्मिनल के रूप में डॉटमैट्रिक्स प्रिंटर सहित।
8. एक 300 डी.पी.आई. का फ्लैट बेड स्कैनर।
9. एक 300 डी.पी.आई. का लेजर प्रिंटर पोस्टस्क्रिप्ट सहित।

सॉफ्टवेयर

1. विनिसिस (जी-वर्सन), पी.सी.-फाकस, सी.डी.एस.-आई.एस.आई.एस., यूनीफाई, इमेज फॉक्सबेस प्लस तथा डी. बेस 3 प्लस-डी.बी.एम.एस. पैकेज।
2. वर्डस्टार, माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, वर्ड परफैक्ट, वर्ड प्रोसेसिंग पैकेज।

3. लोटस 1-2-3 और फ्रेमवर्क-स्प्रेडशीट पैकेज।
4. माइक्रोसॉफ्ट चार्ट, इमेजिन दैट और ड्राइंग गैलरी ग्राफिक्स पैकेज।
5. 'विदुर' डेस्कटॉप पब्लिशिंग सिस्टम, देवनागरी तथा रोमन लिपियों सहित।
6. 'टेक्स' सॉफ्टवेयर देवनागरी तथा रोमन लिपियों में वर्ड प्रोसेसिंग की सुविधा।

3. कला और सांस्कृतिक धरोहर के राष्ट्रीय डेटा बैंक के लिए नोडल एजेंसी

भारत सरकार ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को कला, मानविकी तथा सांस्कृतिक धरोहर के राष्ट्रीय डेटा बैंक की स्थापना से संबंधित सभी मामलों के लिए एक नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है।

केन्द्र ने राष्ट्रीय डेटा बैंक संगठित करने के लिए तकनीकी तथा प्रशासनिक पहलुओं के संबंध में अंतरविभागीय और अंतरअभिकरण आयोजन, समन्वय तथा एकीकरण से संबंधित निर्णय को कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाए हैं। केन्द्र को नोडल एजेंसी के रूप में रख कर, राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के नेटवर्क (निकनेट) के माध्यम से सभी सांस्कृतिक संस्थाओं का विश्वस्तरीय नेटवर्क स्थापित करने का विचार किया जा रहा है। राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के महानिदेशक की अध्यक्षता में एक स्थायी तकनीकी समूह गठित किया गया है जो ऐसी प्रणाली के लिए हार्डवेयर तथा सॉफ्टवेयर के विषय में केन्द्र को सलाह देगा। डा. एस.आर. गौरीकर, निदेशक, (केन्द्रीय वैज्ञानिक यंत्र संगठन, सी.एस.आई.ओ.) चंडीगढ़; डा. बी.एस. भाटिया, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अहमदाबाद; डा. एम.आर. बालकृष्णन, पुस्तकालय अध्यक्ष, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुंबई; डा. ए.एन. मूर्ति, निदेशक, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, दिल्ली; डा. के.आर. शर्मा, सलाहकार, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग, दिल्ली और डा. जयराम हेबर, अध्यक्ष कंप्यूटर प्रोसेसिंग विभाग, एम.आर.एम.ए., हैदराबाद, जो सभी इस स्थायी तकनीकी समूह के सदस्य हैं, केन्द्र में आए और उन्होंने पहले से उपलब्ध सुविधाओं तथा विकसित किए गए डेटाबेसों की जांच की।

स्थायी तकनीकी समूह ने तकनीकी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें राष्ट्रीय सूचना प्रणाली तथा डेटा बैंक स्थापित करने के लिए अगले पांच वर्षों में कार्यान्वित करने के लिए चरणबद्ध योजनाओं की सिफारिश की।

4. अनुसंधान तथा विकास परियोजनाएं

क. सुवाह्य पांडुलिपि चित्र प्राप्ति प्रणाली :

स्थायी तकनीकी समूह की सिफारिशों के अनुसार, सुवाह्य पांडुलिपि चित्र प्राप्ति प्रणाली का विकास कार्य राष्ट्रीय सूचना केन्द्र द्वारा प्रारंभ किया जा चुका है। इस प्रणाली का उपयोग पांडुलिपियों से चित्र लेने, उनका संग्रह करने तथा उन्हें पुन: प्राप्ति करने के लिए किया जाएगा।

ख. डेस्कटॉप प्रकाशन प्रणाली

सभी भारतीय भाषाओं के लिए पी.सी. आधारित 'विदुर' नामक डेस्कटॉप प्रकाशन प्रणाली विकसित की जा रही है। यह परियोजना राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी, मुंबई को विकास के लिए सौंपी गई है। देवनागरी तथा रोमन लिपियों को शामिल करने के लिए 'विदुर' पर विकास कार्य पूरा हो चुका है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में इस प्रणाली को चालू किया जा चुका है और विभिन्न प्रकाशनाधीन पुस्तकों की कैमरानिर्मित प्रतियां तैयार करने के लिए इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। ध्वनिसूचक चिह्नों के साथ रोमन, बंगला, तमिल और उड़िया लिपियों को शामिल करने के लिए आगे और विकास कार्य हो रहा है।

ग. हॉलोग्राफिक प्रदर्शन प्रणाली

स्थायी तकनीकी समूह की सिफारिशों के अनुसार, केन्द्रीय वैज्ञानिक यंत्र संगठन, चंडीगढ़ को प्रदर्शनीय स्वलेखों

(हॉलॉग्राम) विकसित करने का काम सौंपा गया था। उन्होंने केन्द्र द्वारा दी गई दो कला वस्तुओं के हॉलॉग्राम तैयार किए थे। आगे विकास कार्य करने की योजना बनाई जा रही है।

उपर्युक्त डेटाबेस तथा अनुसंधान एवं विकास संबंधी कार्यकलापों के अतिरिक्त, निम्नलिखित सॉफ्टवेयर भी विकसित किया गया :-

1. पुस्तकालय प्रबंध सूचना प्रणाली (लामिस)

स्क्रीन आधारित मेनुस सहित यूजर फ्रेंडली सॉफ्टवेयर का विकास किया गया जिस के लिए सुपर पी.सी./ए.टी. पर मल्टीयूजर जीनिक्स पर्यावरण के अंतर्गत फॉक्सबेस डी.बी.एम.एस. साधनों का उपयोग किया गया। डेटा की प्रविष्टि, डेटा को संहिताबद्ध करने व अद्यतन बनाने की सुविधाओं के अलावा, पाठक किसी भी पुस्तक को लेखक, विषय, शीर्षक, संकेत संख्या आदि जानकारी की सहायता से भी ढूंढ सकता है। पुस्तकालय प्रबंध संबंधी अन्य कार्यों, जैसे पुस्तकें खरीदना, उधार देना, वित्तीय नियंत्रण आदि के संबंध में भी सॉफ्टवेयर विकसित किया जा रहा है।

2. वित्तीय सूचना प्रबंध प्रणाली (फिमस)

सर्वप्रथम, दैनिक नकदी लेनदेन पर नजर रखने के लिए सॉफ्टवेयर विकसित किया गया। केन्द्र के सभी वित्तीय लेनदेन का हिसाब रखने तथा उन पर नजर रखने के लिए व्यापक व्यवस्था की जा रही है।

3. डेटा निर्यात

एच.पी. 3000 प्रणाली पर उपलब्ध मिनिसिस डेटाबेस फाइल की एन.ई.सी. एस-1000 कंप्यूटर प्रणाली पर आई.एन.क्यू. डेटाबेस ढांचे में अंतरित करने की सुविधा का विकास किया गया।

4. कोश सूचना प्रणाली (थिस)

स्क्रीन आधारित मेनुस सहित यूजरफ्रेंडली सॉफ्टवेयर विकसित किया जा चुका है, जिस में श्रेणियों के विभिन्न स्तरों के अंतर्गत तत्संबंधी अर्थों के साथ विभिन्न पारिभाषिक शब्दों पर डेटा दर्ज करने की सुविधा है जैसी कि परियोजना के लिए विकसित चार्ट में कल्पना की गई है। इसकी सहायता से, पारिभाषिक शब्दों का (पूर्णतः या अंशतः) उल्लेख कर के या उनकी श्रेणी के वर्णन या कोड का निर्देश करके टर्मिनल पर सभी संबंधित शब्दों की अर्थ सहित सूची तैयार की जा सकती है और उनकी मुद्रित प्रतियां निकाली जा सकती हैं।

5. जनशक्ति प्रशिक्षण

यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि अध्येताओं को विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए उन नवीनतम विकास कार्यों से अवगत कराया जाए जो कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इसके साथ-साथ इस नवीनतम प्रौद्योगिकी का एक उपयोगी साधन के रूप में इस्तेमाल करने के लिए, उपयोगकर्ताओं के लिए एक यूजर फ्रेंडली इंटरफेस भी तकनीकी प्रशिक्षण की समस्याओं को कम करने के लिए अनिवार्य है। साथ ही उपयोगकर्ताओं के ज्ञान को अद्यतन बनाने के उद्देश्य से उनके लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने की भी जरूरत है।

कला निधि (ख) प्रभाग ने उपयोगकर्ताओं के लिए ऐसे प्रशिक्षण की जरूरत को महसूस किया है। तदनुसार, वर्ष के दौरान डेटा प्रविष्टि कार्य के लिए 15 व्यक्ति और डेटा प्रविष्टि/सत्यापन के लिए तथा विभिन्न डेटाबेस से सूचना प्राप्त करने के लिए 10 अध्येता/विद्वान प्रशिक्षित किए गए हैं। केन्द्र के कार्मियों के लिए, समय-समय पर कंप्यूटर परिचय, शब्द प्रोसेसिंग, डेटाबेस प्रबंध प्रणाली और प्रणाली विश्लेषण एवं डिजाइन आदि विषयों पर संगोपांग भाषण आयोजित किए गए हैं। 'कलाओं के क्षेत्र में प्रलेखन की रीतियां तथा पांडुलिपियां' विषय पर यूनेस्को द्वारा प्रायोजित एक मास

(25 अक्तूबर से 24 नवंबर 1989) का प्रशिक्षण कार्यक्रम केन्द्र के लिए संचालित किया गया। प्रशिक्षण देने के लिए ओसाका (जापान) से इस कार्य के विशेषज्ञ प्रो. सुगीत को निमंत्रित किया गया था।

कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार

कला निधि पुस्तकालय का तीसरा अनुभाग है – सांस्कृतिक अभिलेखागार। यह अनुभाग उन विद्वानों तथा कलाकारों के व्यक्तिगत संग्रहों को इकट्ठा करता है, उनकी सूचियां बनाता है, वर्गीकरण करता है और प्रदर्शित करेगा, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन अपनी रुचि के क्षेत्र या विषय विशेष में सामग्री संग्रहण के कार्य को समर्पित कर दिया है।

अभिलेखागार छः अनुभागों में विभक्त है :-

1. साहित्य, 2. वास्तु शिल्प, 3. छाया पट, 4. संगीत, 5. नृत्य और 6. नाट्य।

प्रत्येक संग्रह को संग्रहकर्ता विद्वान/कलाकार के नाम से एक अलग अस्तित्व के साथ रखा जाता है, हालांकि कई संग्रहों में श्रव्य/दृश्य प्रतिकृतियां, पुस्तकें तथा दो या तीन आयामों वाली कला वस्तुएं भी हो सकती हैं। इस प्रकार सांस्कृतिक अभिलेखागार देश की संस्कृति की विभिन्न धाराओं को एक संपुटिका (कैप्सूल) रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है, चाहे वे फोटोग्राफ, श्रव्य टेप अथवा मूल कलावस्तु के रूप में हों।

वर्ष 1989-90 के दौरान, सांस्कृतिक अभिलेखागार के कार्यकलाप मुख्य रूप से निम्नलिखित दो विषयों पर केन्द्रित रहे :-

1. व्यक्तिगत संग्रहों का अर्जन,

तथा

2. देश के विख्यात कलाकारों की अनुसंधान तथा प्रलेखन परियोजनाएं।

जो व्यक्तिगत संग्रह प्राप्त हो चुके हैं उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उनका उपचार किया जा रहा है और उनकी सूचियां बना कर पुस्तकालय व्यवस्था के हिसाब से रखा जा रहा है ताकि आवश्यकता पड़ने पर उन्हें तुरंत देखा जा सके। ये संग्रह निम्नलिखित से संबंधित हैं :-

1. व्यक्तिगत संग्रहों का अर्जन

क. छाया पट (फोटोग्राफ)

राजा लाला दीनदयाल संग्रह :- राजा लाला दीनदयाल (1840-1910) सन् 1874 से लेकर काफी समय तक भारत के विख्यात फोटोग्राफर रहे। उनके संग्रह में 2857 ग्लास प्लेट निगेटिव, 1120 फोटोग्राफ, सूचकों के मूल रजिस्टर और उनकी माइक्रोफिल्में, स्टूडियो कैमरा लैंस तथा अन्य सहायत वस्तुओं के साथ, स्टूडियो फर्नीचर, प्रकाशन और अनुसंधान तथा प्रलेखन संबंधी अन्य मिलीजुली सामग्री है। इस संग्रह की एक प्रदर्शनी लगाई जाएगी। लाला दीनदयाल के कार्यों के संबंध में एक पुस्तकमाला का प्रकाशन भी निकट भविष्य में हाथ में लिया जाएगा।

हेनरी कार्टियर ब्रेस्सों संग्रह :- श्री हेनरी कार्टियर ब्रेस्सों विश्व के एक अग्रणी फोटोग्राफर है जिन्होंने काफी लंबे समय तक भारत की महान विभूतियों तथा यहां की अनेक घटनाओं के चित्र तैयार किए हैं। उन्होंने 1947 से 1986 तक की अवधि के दौरान भारत में घटित विभिन्न घटनाओं के 107 फोटोग्राफों का एक संकलन अभिलेखागार को प्रदान किया है। इन फोटोग्राफों की एक प्रदर्शनी 1985-86 के दौरान 'पैलेस दि तोक्यो' में आयोजित की जा चुकी है।

ख. संगीत

एस. कृष्णस्वामी संग्रह :- यह भारत के संगीत वाद्यों के विषय पर लिए गए फोटोग्राफों का संग्रह है। इस संग्रह में 554 फोटोग्राफ, 1304 श्वेत-श्याम निगेटिव, 184 श्वेत-श्याम स्लाइडें, 64 रेखाचित्र और भारतीय संगीत वाद्यों के विषय पर शोध टिप्पणियां तथा संगीत के श्रव्य टेप हैं।

ग. नृत्य

मोहन खोखर नृत्य संग्रह :- यह संग्रह श्री मोहन खोखर द्वारा अभिलेखागार को उपहारस्वरूप प्रदान किया गया है।

इसमें भारतीय नृत्य के विषय में बहुमूल्य सामग्री संगृहीत है। शास्त्रीय, लोक एवं जनजातीय किस्म के नृत्यों एवं नर्तकों के श्वेत-श्याम फोटोग्राफ व निगेटिव और रंगीन पारदर्शियां भी इसमें शामिल हैं। संग्रह का कार्य पांचवें दशक के प्रारंभिक वर्षों में शुरू किया गया था, परन्तु इसमें पिछली शताब्दी के नृत्यों की सामग्री भी सम्मिलित है। इसके अलावा संग्रह में पुस्तकें तथा मूल कलावस्तुएं, समाचारपत्रों की कतरनें, क्षेत्रगत टिप्पणियां, भेंटवार्ताओं के श्रव्य टेप और भारतीय नृत्य के पंडितों, गुरुओं आदि के साथ हुआ व्यक्तिगत पत्रव्यवहार भी संकलित है। यह संग्रह इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को सौंपा जा रहा है। इस के स्थानांतरण की प्रक्रिया दिसंबर 1991 तक पूरी हो जाएगी।

2. देश के विख्यात कलाकारों के संबंध में अनुसंधान तथा प्रलेखन की परियोजना :

इस कार्यक्रम के अंतर्गत अभिलेखागार ने विभिन्न कला रूपों के वयोवृद्ध गुरुओं/कलाकारों के श्रव्य/दृश्य/फिल्म प्रलेखों की एक नई श्रृंखला ''महान् गुरु माला'' के नाम से प्रारंभ की है।

श्रीमती माणिक्यम्मा शारिदे : श्रीमती माणिक्यम्मा आन्ध्र प्रदेश की देवगणिका है। उनकी आयु 75 वर्ष से ऊपर है। वह गोदावरी जिले में स्थित बल्लिपाडु के मदनगोपाल मंदिर में 40 वर्ष से भी अधिक समय से नृत्यपूजा करती रही हैं। आध्यात्म रामायण के श्लोकों के लिए श्रीमती माणिक्यम्मा का अभिनय अक्तूबर 1989 में वीडियो में भरा गया। इसी तरह कुछ और भी प्रसंग, जैसे जावाली तथा वर्णम् और भरतनाट्यम के विभिन्न पक्षों पर गुरु नटराज रामकृष्ण के साथ हुए विचारविमर्श के भी टेप तैयार किए गए। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने श्रीमती माणिक्यम्मा के अभिनय की नौ घंटे की रेकार्डिंग की व्यवस्था की।

गुरु अम्मान्नूर माधव चाकियार का अभिनय : 73 वर्षीय गुरु अम्मान्नूर माधव चाकियार कुडियअट्टम नामक शास्त्रीय नाट्य रूप में चाकियार परिवार के वरिष्ठतम गुरु हैं। गुरु अम्मान्नूर के अभिनय के बालिवधम् तथा पार्वतीविरहम् नामक दो खंडों के फरवरी 1990 के दौरान पांच घंटे के वीडियो टेप तैयार किए गए।

श्री शांतिवर्द्धन का नाट्यलेखन-रामायण : श्री शांतिवर्द्धन देश के एक महान नाट्यलेखक थे। उनके द्वारा छठे दशक के मध्य में तैयार की गई नृत्यनाटिका भोपाल के 'लिटल बैले ट्रुप' के कलाकारों द्वारा मार्च 1990 में मंचित की गई और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इसकी तीन घंटे लंबी वीडियो रेकार्डिंग की।

पं. मल्लिकार्जुन मंसूर : 80 वर्षीय मल्लिकार्जुन मंसूर इस समय उस्ताद अलाउद्दीन खान के घराने की खयाल गायकी के सबसे वयोवृद्ध विद्वान हैं। पं. मंसूर का ढाई घंटे का कार्यक्रम फरवरी 1990 में श्रव्य टेपों में भरा गया जो एक उच्चस्तरीय संगीत का उत्कृष्ट नमूना है।

कार्यक्रम घ : क्षेत्र अध्ययन कार्यक्रम

केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने संग्रह करने की दृष्टि से कुछ विशेष क्षेत्रों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। इस संग्रह कार्य के लिए चुना गया पहला विशेष क्षेत्र दक्षिणपूर्व एशिया है। समीक्षाधीन वर्ष में, दक्षिणपूर्व एशिया विषयक विभिन्न प्रकाशन प्राप्त करने के लिए पर्याप्त परिश्रम किया गया। दक्षिणपूर्व एशिया की कलाओं के ग्रंथसूचीय सर्वेक्षण का कार्य हाथ में लिया गया। दक्षिणपूर्व एशियाई कलाओं का सूचक (इंडेक्स) तैयार करने का काम भी शुरू किया गया।

दिसंबर 1989 में भारत में इंडोनेशिया के राजदूत महामहिम प्रो. इडा बगस मंत्र इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पधारे। उन्होंने सदस्य-सचिव से विचारविमर्श किया। यह विचारविमर्श अन्य बातों के साथ-साथ, केन्द्र तथा इंडोनेशियाई संस्थाओं के बीच अकादमिक सहयोग एवं आदान-प्रदान के विभिन्न पक्षों पर हुआ।

II. कलाकोश

जबकि कला निधि का कार्य प्राथमिक और गौण सामग्री को इकट्ठा करना, सूचना की छानबीन करना और डेटाबेस

तैयार करना है, वहीं कला कोश बौद्धिक परंपराओं का उनके बहुस्तरीय एवं बहुविषयक संदर्भों में अनुसंधान करता है। यह केन्द्र के मुख्य अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में काम करता है। यह पाठ्य, मौखिक, दृश्य तथा श्रव्य के साथ-साथ सिद्धांत तथा व्यवहार पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस प्रभाग ने,

क. उन प्राथमिक संकल्पनाओं का पता लगाया है जो भारतीय विश्व दृष्टिकोण की मूलाधार हैं और जो सभी विषयों/शास्त्रों तथा जीवन के आयामों में व्याप्त है।

ख. प्राथमिक ग्रंथों की स्रोत सामग्री का भी पता लगाया है जो अब तक अज्ञात, अप्रकाशित और अप्राप्य थी। अब उस सामग्री को अनुवाद के साथ मूल भाषा में प्रकाशित किया जाएगा।

ग. उन विद्वानों तथा पंडितों की कृतियों के प्रकाशन की योजना बनाई है जो अपने ही समग्रवादी दृष्टिकोण के माध्यम से, अन्तर सांस्कृतिक पद्धति तथा बहुविषयक रीति से कलात्मक परंपराओं को समझने में अग्रणी रहे हैं और

घ. एक 21 खंडीय विश्वकोश के निर्माण का कार्यक्रम प्रारंभ करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार किया है, प्रभाग का कार्य मुख्य रूप से चार बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

1. *कलातत्वकोश* : आधारभूत संकल्पनाओं का कोश और पारिभाषिक शब्दावलियां।
2. *कलामूलशास्त्र* : उन आधारभूत ग्रंथों की श्रृंखला जो भारतीय कलात्मक परंपराओं की बुनियाद है और प्राथमिक ग्रंथ जो किसी भी कला विशेष से संबंधित है।
3. *कलासमालोचन* : समीक्षात्मक पांडित्य की श्रृंखला, और
4. *कलाविश्वकोश* : कलाओं का बहुखंडीय विश्वकोश।

कार्यक्रम क : कलातत्वकोश

कला कोश प्रभाग की पहली परियोजना है भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का कोश। विभिन्न विद्वानों के परामर्श से, डा. लक्ष्मण शास्त्री जोशी के सर्वोपरि मार्गदर्शन में, ऐसे लगभग 250 पारिभाषिक शब्दों की सूची तैयार की गई, जो अनेक शास्त्रों तथा कलाओं में व्यवहृत होते हैं। प्रत्येक संकल्पना का अनुसंधान अनेक विषयों/शास्त्रों तथा प्राथमिक ग्रंथों में उसके प्रयोग के संदर्भ में किया जाता है। ऐसे विश्लेषण के द्वारा भारतीय परंपरा के अंतर्विषयक/अंतरशास्त्रीय स्वरूप को सिद्ध किया जा सकता है।

शब्दकोश के लिए अपनाई गई पद्धति में सर्वप्रथम संस्कृत, प्राकृत, पाली आदि भाषाओं में उपलब्ध प्राथमिक स्रोत सामग्री की छानबीन की जाती है। शब्द या संकल्पना विशेष से संबंधित उद्धरणों को निकाल कर और संगत टीका के साथ उनका अंग्रेजी में अनुवाद करके, विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों में विख्यात विद्वानों को उन चुने हुए पारिभाषिक शब्दों पर लेख लिखने के लिए कहा जाता है। साथ ही एक कंप्यूटरीकृत डेटाबेस का भी विकास किया जाता है।

इन लेखों में यह बताया जाता है कि अमुक संकल्पना प्राचीनतम काल से कैसे विकसित हुई है, विभिन्न क्षेत्रों में उसका विस्तार कैसे हुआ है तथा अंततोगत्वा वह विभिन्न कलाओं में किन-किन रूपों में रूढ़ हुई है।

अनिश्चित कल्पनाओं पर आधारित चिन्तन से लेकर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विषय के प्राथमिक ग्रंथों तक और इतिहास, पुराण से लेकर कलाओं तक फैली हुई भारतीय परंपरा के प्राथमिक स्रोतों की छानबीन का कार्य संबंधित विषयों में विशिष्ट रूप से पारंगत संस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्राच्य विद्या की लगभग सभी संस्थाओं को सहयोजित किया गया है। इनमें उल्लेखनीय हैं : प्रज्ञा पाठशाला मंडल, वैदिक संशोधन मंडल, पूना विश्वविद्यालय, उच्चतर तिब्बतीय अध्ययन संस्थान, सारनाथ; काशिराज न्यास, वाराणसी; संस्कृत शोध अकादमी, मेलकोटे; कुप्पुस्वामी शास्त्री अनुसंधान संस्थान, मद्रास तथा अन्य अनेक संस्थाएं।

अरबी तथा फारसी स्रोत सामग्री में भी इन शब्दों की खोजबीन करने के लिए कदम उठाए गए हैं। आगे चलकर

इनके लिए ग्रीक तथा लेटिन स्रोतों का भी अवगाहन किया जाएगा। अरबी तथा फारसी के आलिमों और ग्रीक तथा लेटिन के विद्वानों से प्रथम संपर्क किया जा चुका है।

आठ शब्दों के बारे में प्रथम खंड प्रकाशित किया जा चुका है। उसमें 'ब्रह्मन्', 'पुरुष', 'आत्मन्', 'शरीर', 'प्राण', 'बीज', 'लक्षण' और 'शिल्प' शब्दों का विवेचन किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय विद्वत्समुदाय में इस खंड का बहुत अच्छा स्वागत हुआ है और इसकी विस्तृत समीक्षा की गई है। कलातत्वकोश पर अपने विचार व्यक्त करते हुए पीटर मेलकिन ने कल्पना आधारित कलाओं को समर्पित टेमेनोस पत्रिका (अंक 11, 1990) में लिखा है,

> "यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण नई कोशमाला का प्रथम खंड है जिसमें भारतीय कलाओं की आधारभूत एकता के साथ-साथ उनके विकासक्रम को भी प्रस्तुत किया जा रहा है, उन्हें सौन्दर्य शास्त्र के साथ संयुक्त रूप में भारतीय संस्कृति तथा भारतीय अध्यात्म का ही व्यापक विस्तार माना गया है जो उचित भी है। जहां तक विद्वत्ता का प्रश्न है इस खंड में, कोई त्रुटि दृष्टिगोचर नहीं होती। उद्धृत संदर्भों का परास अतिविस्तृत एवं प्रबोधक है। इसकी यह एक विशेषता ही इसे अमूल्य ग्रंथ बनाने के लिए पर्याप्त है। कलातत्वकोश अपने बहुविध योगदाताओं के माध्यम से कई प्रकार के मत प्रस्तुत करता है, जिनमें से कुछ परस्पर विपरीत भी हैं। इसके अलावा यह उन आन्तरिक स्तरों के अलग-अलग तरह के अनुभव को भी दर्शाता है जहां से संस्कृत की पारिभाषिक शब्दावली मूलतः व्युत्पन्न हुई है . . . इस समय यह कार्य इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि आधुनिक पश्चिम की प्रकृतिवादी परंपराएं दिवालिया हो गई है और यूरोप तथा अमरीका में कलाएं संवेदनवाद में या केवल धूर्तता में छिन्न-भिन्न होकर बिखर रही हैं अथवा जीवन के आंतरिक तथा आध्यात्मिक स्तरों की तरफ मुड़ रही है, जबकि भारत विश्वास के संकट के दौर से गुजरता हुआ प्रतीत हो रहा है जिसमें उस भव्य परंपरा को छोड़ कर पाश्चात्य कृत्रिमतापूर्ण आधुनिकता तथा पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाने का खतरा पैदा हो गया है।"

कलातत्वकोश के द्वितीय खंड में 'दिक और काल' विषयक 16 पारिभाषिक शब्दों का विवेचन होगा। इसे नवंबर, 1990 तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। विश्वविख्यात विद्वानों को इन शब्दों पर लिखने का कार्य सौंपा गया है। इन विद्वानों में डा. विद्यानिवास मिश्र, प्रो. फ्रिट्ज स्टाल, डा. लेबिस रौवेल, डा. ऐ. बालस्लोव, डा. ए.एम. घाटगे और डा. जी.सी. पाण्डे शामिल है। द्वितीय खंड के लिए सामग्री संकलित करने का काम वर्षभर चलता रहा और अब यह समाप्तप्राय है। आशा है यह शब्दकोश विद्वानों शोधछात्रों तथा कलाकारों के लिए उपयोगी संदर्भ ग्रंथ और भारतीय कला एवं संस्कृति में रुचि रखने वाले किसी भी पाठक के लिए सूचना की खान साबित होगा।

कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र

वर्ष 1988 के दौरान 'मात्रालक्षणम्' तथा 'दलितम्' नामक दो मूल पुस्तकें प्रकाशित की गई थीं। इनका औपचारिक विमोचन किया था इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री राजीव गांधी ने। अनेक पत्रिकाओं में इन दोनों पुस्तकों के बारे में उत्कृष्ट समीक्षाएं प्रकाशित हुई।

डा. जोन टेदनर ने 'टेमेनोस' नामक पत्रिका में मात्रालक्षणम् की समीक्षा करते हुए लिखा है :

> "किसी भी व्यक्ति को कोई भी मौलिक रचना करने से पहले इस उत्तम ग्रंथ को अवश्य पढ़ना चाहिए। यह प्रथम खंड सामवेद की कौथुम-राणायणीय शाखा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीकी ग्रंथ है। मेरे विचार से यह कहना सही होगा कि इस विषय में पश्चिम भारतीय मानस एवं आत्मा के समान कभी इतना परिपूर्ण व गंभीर नहीं रहा, और यह उन विभिन्न पवित्र परंपराओं को जानने के लिए आवश्यक भी है जो हमारी संस्कृतियों में व्याप्त है। जैसा कि यह पुस्तक स्पष्टतः प्रमाणित करती है, भारतीय संगीत आह्लाद, स्वरांतराल और अलंकरण की उत्कृष्ट कला है।"

डा. जी.एच. तरलेकर ने 'संगीतनाटक' (अंक 94, अक्तू-दिसं. 1989) में अपनी समीक्षा में लिखा है।

> "डा. होवार्ड एक विशेषज्ञ संगीतशास्त्री होने के नाते इस ग्रंथ का कार्य करने में पूर्णतः समर्थ हैं। डा. होवार्ड की

विस्तृत टिप्पणियां बहुत ही बहुमूल्य हैं क्योंकि उन्होंने प्रत्येक मामले में उदाहरण जोड़े हैं। पुस्तक के अंत में एक ग्रंथसूची, एक सामों का सूचक तथा एक सामान्य सूचक भी संलग्न है। यह तो सभी को मानना पड़ेगा कि 'मात्रालक्षणम्' के अध्ययन में डा. होवार्ड ने दिल से जो प्रयत्न किए हैं वे वास्तव में प्रशंसनीय हैं।''

भारतीय परंपरा विशेषत: कलाओं से संबंधित आधारभूत ग्रंथों को डिजाषी रूप में प्रकाशित करने के कार्यक्रम के अंतर्गत, जैमिनीय सामवेद (गण तथा आर्चिक दोनों), काण्व शतपथ ब्राह्मण, आपस्तंब एवं बौधायन श्रौतसूत्र, तन्त्रसमुच्चय और बृहद्देशी जैसे अत्यन्त तकनीकी ग्रंथों के संकलन एवं संपादन के कार्य में पर्याप्त प्रगति हुई है। संगीत एवं नृत्य विषयक ये ग्रंथ मुद्रण के लिए लगभग तैयार हैं। बृहद्देशी, नर्त्तननिर्णय, हस्तमुक्तावली, और फारसी ग्रंथ रिसाल-इ-रागदर्पन। केरल के वास्तुशिल्प पर लिखी गई अत्यंत महत्वपूर्ण लेकिन जटिल पाठों वाली पुस्तक 'तन्त्रसमुच्चय' के संपादन का कार्य प्रारंभ हो चुका है। आगमों तथा पुराणों में, ईश्वरसंहिता और कालिका पुराण प्रकाशन के लिए तैयार है। उड़ीसा से प्राप्त हुई एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'कवि कर्ण' भी प्रकाशन के लिए तैयार है।

कलामूलशास्त्र की श्रृंखला के कार्य में प्राच्य अध्ययन के क्षेत्र में कार्यरत सभी प्रमुख संस्थाओं तथा विश्व के सभी भागों से मान्यता प्राप्त विद्वानों को सहयोजित किया गया है। इनमें से कुछ के नाम हैं : हेलसिंकी के प्रो. आस्को पारपोला, डा. के.वी. शर्मा, डा. सी.आर. स्वामिनाथन, वैदिक संशोधन मंडल, भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान और प्रज्ञा पाठशाला मंडल सभी वैदिक साहित्य/ग्रंथों के लिए, डा. वेन होवार्ड, डा. मुकुंद लाठ, डा. प्रेमलता शर्मा, प्रो. सत्यनारायण और डा. महेश्वर नियोग – संगीत एवं नृत्य संबंधी ग्रंथों के लिए; डा. लक्ष्मी थथचर, प्रो. विश्वनारायण शास्त्री – आगमों और पुराणों के लिए; और डा. कुंजुनी राजा, डा एम.ए. ढाकी, डा. ब्रूनो दाज्जां – वास्तुकला विषयक ग्रंथों के लिए।

डा. विद्यानिवास मिश्र प्राथमिक स्रोतों का एक अलग संग्रह तैयार कर रहे हैं। इस श्रृंखला को 'कला-आधार' कहा जाएगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपने कलातत्वकोश, कलामूत्रशास्त्र के अनुसंधान एवं प्रकाशन कार्यक्रमों और कलानिधि प्रभाग के माइक्रोफिल्म तथा माइक्रोफिश कार्यक्रम के माध्यम से अनेक भारतीय संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित किए हैं और उन संस्थाओं को उनके कार्यक्रमों में सहयोग दिया है और उन संस्थाओं के विद्वानों को अपने कार्यक्रमों में सहयोजित किया है।

इन संस्थाओं में कुछ उल्लेखनीय हैं : अडयार पुस्तकालय एवं शोध संस्थान, मद्रास; मद्रास संस्कृत कालेज, मद्रास; कुप्पुस्वामी शास्त्री शोध संस्थान, मद्रास; एशियाई अध्ययन संस्थान, मद्रास; पूना विश्वविद्यालय, पुणे; वैदिक संशोधन मंडल, पुणे; अनन्ताचार्य भारत विद्या संस्थान, मुंबई; भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान, पुणे; प्रज्ञा पाठशाला मंडल, वाई, महाराष्ट्र; केदारनाथ गवेषणा प्रतिष्ठान, उड़ीसा; के.पी. जयोमबापू शर्मा शोध संस्थान, मणिपुर; वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, केन्द्रीय उच्चतर तिब्बतीय अध्ययन संस्थान, वाराणसी; भारतीय अध्ययन का अमेरिकी संस्थान, वाराणसी। इन सब संस्थाओं को सहयोजित किया गया है।

भारतविद्या का फ्रांसीसी संस्थान, पांडीचेरी, इकोल फ्रैंसे द एक्स्ट्रीम ओरिएंट, पांडीचेरी और फ्रांस स्थित सी.एन.आर.एस. के कई प्रभागों से भी केन्द्र के कार्यक्रमों में सहयोग मिल रहा है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र जर्मन विद्वानों, खासतौर से स्टैसबर्ग तथा तुबिंजन विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों से संपर्क बनाए हुए है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भी एक सहयोग कार्यक्रम चल रहा है जिसके अंतर्गत बोस्टन स्थित नित्यानंद संस्थान के साथ मिलकर एक प्रकाशन कार्यक्रम, विशेष रूप से कश्मीर शैवमत पर पुस्तकों का प्रकाशन शुरू किया जा रहा है।

यद्यपि कलाकोश प्रभाग के दोनों कार्यक्रमों को मुख्य रूप से लिखित पाठों पर भी केन्द्रित किया गया है, लेकिन कोई भी ऐसा काम तब तक पूरा नहीं कहा जा सकता जब तक कि इन पाठों/ग्रंथों के मौखिक संप्रेषण की अनुपम परंपरा पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इस दिशा में भी दो वर्ष पहले वैदिक स्वर पद्धति के अभिलेख (रिकार्ड) तैयार करके छोटा सा कदम उठाया था। इस वर्ष केन्द्र ने दुर्लभ सोमयाग का एक पूर्ण वैज्ञानिक श्रव्य-दृश्य अभिलेख तैयार करने का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य हाथ में लिया।

इसके अंतर्गत सोमयाग की लगभग 70 घंटे की आद्योपांत वीडियो रेकार्डिंग की गई। यह सोमयाग लगभग एक मास तक चला था। जन साधारण को दिखाने के लिए इस सोमयाग की रेकार्डिंग का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार करने का प्रस्ताव है। इसका मूल संस्करण अभिलेखागार में सुरक्षित रखा जाएगा ताकि विद्वान लोग शोध कार्यों के प्रयोजन से उसका अवलोकन कर सकें।

कार्यक्रम ग : कलासमालोचन

कलाकोश प्रभाग का तीसरा कार्यक्रम निर्वचन तथा विश्लेषण जैसे कार्यों से संबंधित द्वितीय श्रेणी की सामग्री के विषय में है। इन निर्वचनों एवं विश्लेषणों के द्वारा ही उन्नीसवीं शताब्दी में तथा बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारतीय तथा एशियाई कलाओं के संबंध में एक नए दृष्टिकोण की नींव डाली गई और वे आज भी सुसंगत एवं उपोदय हैं। इस दिशा में आगे अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए चुने कलासमालोचन श्रृंखला (ग्रंथमाला) के अंतर्गत शामिल करने के लिए ग्रंथों/लेखकों के चयन कार्य प्रारंभ किया गया है। चयन की कसौटी अंतरसांस्कृतिक बोध तथा बहुविषयक दृष्टिकोण के कारण उस कृति का महत्व एवं उसकी दुर्लभता आदि हैं।

प्रथम चरण में, विलियम स्टटरहाइम द्वारा लिखित 'राम लेजंड एंड राम रिलीफ्स' 'दि थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर' जो एक चित्रात्मक एवं उच्च कलात्मक ग्रंथ है, और डा. आनन्द के. कुमारस्वामी के 'सेलेक्टेड लेटर्स' प्रकाशित किए गए हैं।

तीनों ही प्रकाशनों की विद्वानों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इन ग्रथों पर प्रकाशित कुछ समीक्षाएं नीचे दी जा रही हैं।

राम लेजंड एंड राम रिलीफ्स इन इंडोनेशिया

श्री ए. रंगनाथन ने अपनी समीक्षा में कहा है :

> ''इस प्रकाशन की कला - इतिहास के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि बताने के लिए सुविसंपन्न आधारों का उल्लेख किया जा सकता है। स्मरण रहे कि आनन्द कुमारस्वामी की प्रख्यात कृति 'भारतीय तथा इंडोनेशिया आर्ट' का प्रथम संस्करण 1927 में प्रकाशित हुआ था, अर्थात् स्टटरहाइम की कृति के प्रकाशन के ठीक दो वर्ष बाद यद्यपि कुमारस्वामी के ग्रंथ में भारतीय कला का अति उत्तम विश्लेषण किया गया था फिर भी यह ध्यातव्य है कि इस ग्रंथ में इंडोनेशिया तथा दक्षिणपूर्व एशिया के उपान्त क्षेत्रों की कला को भी इसमें कुछ हद तक सम्मिलित किया गया है जहां-जहां उस पर भारतीय प्रभाव दृष्टिगोचर होते है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार कुमारस्वामी की कृति एशियाई परिवेश में स्थूल-कला-समालोचन की थी, उसी प्रकार स्टटरहाइम की कृति इंडोनेशिया वातावरण में सूक्ष्म-कला-समालोचन थी। दुर्भाग्यवश, स्टटरहाइम की कृति उस समय अपना प्रत्याशित प्रभाव नहीं डाल सकी क्योंकि यह जर्मन भाषा में लिखी गई थी। जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय के डा. सी.डी. पालीवाल और डा. जे.पी. जैन दोनों के प्रति हम आभारी है जिन्होंने इस महान कृति को अंग्रेजी में रूपांतरित कर दिया है।''

कृष्ण चैतन्य ने साहित्य अकादमी के पत्रिका 'दि इंडियन लिटरेचर' में एक विस्तृत समीक्षा प्रकाशित की है।

> ''जन साधारण के लिए इसमें जो सबसे रुचिकर चीज प्रस्तुत की गई है वह है इसके चित्र (प्लेट)। ये महत्वपूर्ण होने के साथ- साथ संख्या में भी बहुत है और किसी एक पुस्तक में एक साथ आसानी से इतने नहीं मिल सकते।''

दि थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर

इस पुस्तक की भी कई पत्रिकाओं में समीक्षा की गई है। इसकी समीक्षा करते हुए राम धमीजा लिखते हैं,

> ''लोकेश चन्द्र द्वारा निर्मित सहस्त्रभुज अवलोकितेश्वर (दि थाउजंड आर्म्ड अवलोकितेश्वर) लेखक के विचार से, एक अलग किस्म की अनुपम कृति है।''

कृष्ण चैतन्य ने एक समीक्षा में कहा है :

''अत्यंत संक्षेप में, यह पुस्तक बौद्ध देवता 'अवलोकितेश्वर' के प्रतिमा विज्ञान तथा प्रतीकवाद के विकास का विवेचन करती है। इस पुस्तक के पुनर्निर्माण के लिए कई देशों में प्रचलित परंपराओं का अनुसंधान करना पड़ा है और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपनी प्रकाशन माला के प्रथम पुष्प के रूप में इतने महत्व के इस ग्रंथ को प्रकाशित करने के लिए बधाई का पात्र है।''

डा. लोकेश चन्द्र को लिखे दिनांक 16 अप्रैल, 1989 के पत्र में, प्रसिद्ध अंग्रेजी कवयित्री डा. कैथलीन रैने ने लिखा है:

''कपिला वात्स्यायन ने अवलोकितेश्वर पर आपकी उत्कृष्ट पुस्तक की एक प्रति मुझे दी है इसलिए नहीं कि इसके प्रकाण्ड पांडित्य का मूल्यांकन करना मेरी संकुचित क्षमता के वश की बात है, बल्कि इसलिए कि यह पांडित्य भावावेश एवं उत्साह से सरोवर है, और इस मन्वंतर (मानव युग) की इस अन्तिम अवस्था की एक साधारण कवयित्री होते हुए भी मैं यह देख सकती हूं कि यह कृति अपर कल्पनादृष्टि से प्रज्ज्वलित है। मैं समझती हूं कि कपिलाजी प्रकाशनों का जो कार्यक्रम तैयार कर रही हैं वह 'बूलिंजन सिरीज' के बाद अब तक का सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। समकालीन वितंडावादी जगत, जिसने ज्ञान के धार्मिक स्वरूप को ही प्रकट किया है, कि व्यक्तिगत मनस्तरंगों तथा वादों में न पड़ कर विशुद्ध वास्तविकता के साथ ज्ञान को प्रस्तुत करने के प्रयत्न और सौंदर्य एवं शान्ति के सहस्राब्दियोंसहस्र जीवंत रूपों में उसकी अद्भुत अभिव्यक्ति को हृदयंगम करने में तभी सफलता मिल सकती है, जब उसकी जड़ों में पहुंचा जाए।''

सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद कुमारस्वामी (आनंद कुमारस्वामी के चुने हुए पत्र)

इस पुस्तक की समीक्षा देश के कई प्रमुख समाचारपत्रों/पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है, जैसे, 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'संडे ऑब्जर्वर', 'इंडियन एंड वर्ल्ड आर्ट्स एवं क्राफ्ट्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'साहित्य अकादमी की पत्रिका', 'इंडियन लिटरेचर' आदि आकाशवाणी के मद्रास केन्द्र से भी इस पुस्तक की समीक्षा प्रसारित की गई है। 7 मई, 1989 के 'इंडियन एक्सप्रेस' में इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए, ईशानमूर्ति ने लिखा था कि

''इस पुस्तक को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की प्रकाशन माला के प्रथम पुष्प के रूप में चुनना एक बहुत ही उपयुक्त निर्णय था। केन्द्र के कलाकोश प्रभाग द्वारा इसके चयन के पीछे जो तर्काधार था वह निश्चय ही इसका अंतरसांस्कृतिक बोध, बहुविषयक दृष्टिकोण तथा भाषा की कठिनाई या सभी प्रतियां बिक जाने के कारण उसकी अनुपलब्धता रहा होगा। ये ही वे मानदंड हैं जो केन्द्र ने अपनाए हैं और अन्य लोग भी इसको पूर्णतः अनुमोदित करेंगे। यह एक अति उत्तम प्रकाशन है जिसके लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा संपादक गण प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं।''

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली के महाप्रबंधक को संबोधित दिनांक 20 जुलाई, 1989 के अपने पत्र में कैलिफोर्निया (संयुक्त राज्य अमेरिका) के श्री रिचर्ड जेनकिन्स ने लिखा था,

''आप के नए प्रकाशन 'सिलेक्टेड लेटर्स आफ आनंद कुमारस्वामी' के लिए और उनकी संग्रहीत कृतियों को पुनः प्रकाशित करने के आप के निर्णय के लिए आपकी प्रशंसा में दो शब्द लिखना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। छठे दशक के मध्य की बात है जब मैं सर्वप्रथम आनंद कुमारस्वामी की रचनाओं से परिचित हुआ था। किंतु मेरे जैसे जनसाधारण के लिए उनके बहुत से लेख उनके प्रकाण्ड पांडित्य और पारस्परिक संदर्भोल्लेख के कारण कुछ कम पल्ले पड़ रहे थे। लेकिन यहां इन पत्रों में जनसाधारण भी उनके गंभीर ज्ञान और बुद्धि की व्यापकता से अवगत हो सकता है। इन पत्रों के माध्यम से जो विशेष रूप से उजागर हो रहा है। मानवीय मर्यादाओं, प्रतिमानों का बराबर उल्लेख करते हुए उनमें बारबार इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि चिंतन और उसके व्यावहारिक रूप तब तक व्यर्थ है जब तक कि वे सिद्धांतों से उनके परिणामों तक, 'ऊपर' से 'नीचे' तक न हों। एक बार फिर, आपके प्रकाशन के लिए मेरी सराहना और आपके भावी प्रयासों के लिए मेरी संपूर्ण शुभकामनाएं।''

डा. आनंद के. कुमारस्वामी की संग्रहीत कृतियां, इस कार्यक्रम के अंतर्गत विषयानुसार सुव्यवस्थित लगभग 30 खंडों में आगे आने वाले कुछ वर्षों में प्रकाशित की जा रही हैं। आलोच्य वर्ष में, डा. आनंद के. कुमारस्वामी की कृतियों के कई खंड प्रकाशन की विभिन्न अवस्थाओं में है। निम्नलिखित खंडों का 1990 में विमोचन करने का कार्यक्रम है :-

1. वॉट इज सिविलाइजेशन?
2. टाइम एंड ईटर्निटी
3. विद्यापति पदावली
4. एसेज ऑन नेशनलिज्म।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत 'सिलेक्टेड लेटर्स आफ रोमाँ रौलाँ' शीर्षक खंड इस वर्ष प्रकाशित किया गया और 19 जनवरी, 1990 को 'गांधी स्मृति' के परिसर में आयोजित एक शानदार कार्यक्रम में डा. वी.एन. पांडे द्वारा इसका विमोचन किया गया।

इस पुस्तक की समीक्षा अनेक भारतीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हुई है जिनके नाम हैं :- 'दि स्टेट्समैन', 'दि संडे ऑब्जर्वर', 'दि टाइम्स ऑफ इंडिया', और 'डेकन हेराल्ड'। 7 अप्रैल, 1990 के 'दि संडे ऑब्जर्वर' में प्रकाशित अपनी समीक्षा में ए.के. बनर्जी ने कहा है कि

> "इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने काफी ऊंचा स्तर स्थापित किया है। दो वर्ष पहले केन्द्र ने 'सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ के. कुमारस्वामी' प्रकाशित किया था और अब यह वैसा ही दूसरा प्रकाशन है। इससे बढ़िया चुनाव और हो ही नहीं सकता था। जिस व्यक्ति ने बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से सारे संसार को हिला दिया था और जिसने पूर्व और पश्चिम के बीच एक विशाल सेतु बन कर सारे संसार को जोड़ दिया था, उसके इन पत्रों से बहुत कुछ जाना और ग्रहण किया जा सकता है क्योंकि उनमें विचार की लगभग हर बड़ी श्रृंखला समाहित है जो उनकी प्रकाशित कृति में विकसित की गई है। इस प्रकार उनसे लेखक के संपूर्ण व्यक्तित्व का कोना-कोना झांकने में सहायता मिलती है। 'सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ रोमेन रौलैंड' को पढ़ना उन लोगों के लिए विशेष रूप से लाभप्रद होगा जिन्होंने उनकी कृतियों को नहीं पढ़ा है।"

20 मई, 1990 के 'दि स्टेट्समैन' में समीक्षक ने लिखा :

> "अन्य संस्कृतियों के संदेशों को हृदयंगम करते हुए, रौलाँ ने अपने आप को नर-नारियों के मनों, भिन्न-भिन्न लोगों तथा जातियों/नस्लों को, और खास तौर से एशिया तथा यूरोप को परस्पर जोड़ने वाले सेतु की भूमिका सौंपी। यह पत्रों का संग्रह, जिसमें बहुत से पत्र तो पहली बार प्रकाशित हो रहे हैं, भारत तथा 'फ्रांसीसी लेखन' के बीच हुए गौरवपूर्ण संवाद की याद ताजा कर देता है।"

श्री ए. रंगानाथन ने 13 मार्च, 1990 की आकाशवाणी के मद्रास केन्द्र से प्रसारित अपनी वार्ता में पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा :

> "इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का प्रथम प्रकाशन 'सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ आनंद कुमारस्वामी' जिस प्रकार 'नित्य दर्शन' के गौरवपूर्ण वैभव को अपने विविध रूपों में उजागर करता है उसी प्रकार केन्द्र का दूसरा प्रकाशन, 'सिलेक्टेड लेटर्स ऑफ रोमेन रौलैंड' पूर्व-पश्चिम को जो सांस्कृतिक संवाद एम्पियर के साथ शुरू हुआ था उसके विभिन्न आयामों को अभिव्यक्त करता है।"

कला समालोचन श्रृंखला के जिन अन्य ग्रंथों का विमोचन 1990 में किया जा रहा है वे हैं : 'प्रिंसिपल्स ऑफ कॉम्पोजीशन ऑफ हिन्दू स्कल्पचर' लेखक एलिस बोनर, और 'इस्लामिक आर्ट एंड स्पिरिच्युअलिटी' ले. सैयद हुसैन नस्र।

पॉल मूस की पुस्तक 'बाराबुदुर' का फ्रांसीसी से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद का कार्य भी प्रगति पर है।

इस कार्यक्रम में सहयोजित विख्यात विद्वानों के नाम हैं : श्री ब्रायन कीबल, श्री एल. कैनेफस्काय, डा. स्टेला क्रैमरिश, पार्टिन लर्नर, प्रो. टी.एस. मैक्सवेल, श्री जेम्स एस. क्राउच, प्रो. मिकाइल डब्लू माइस्तर, श्री एलविन मूर

जूनियर, प्रो. सैयद हुसैन नस्र, सुश्री कैथलीन रैने, श्री पॉल श्रेडर, डा. एस. दुराई राजा सिंगम और डा. (श्रीमती) लूइस पैनेनबर्ग स्टटरहाइम।

कार्यक्रम घ : कला विश्वकोश

एक कला विश्वकोश प्रकाशित करने का प्रस्ताव केन्द्र के कलाकोश प्रभाग द्वारा प्रारंभ किया गया है।

उक्त विश्वकोश के लिए आशय-विधान तथा कार्यसूची तैयार करने के लिए 8-15 मार्च, 1989 को एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यूनेस्को की ओर से आंशिक रूप से सहायता प्राप्त इस कार्यशाला में विश्वभर के कला विशेषज्ञ विद्वानों ने भाग लिया। भाग लेने वालों में से कुछ विद्वानों के नाम नीचे दिए जा रहे हैं :-

डा. ब्रूनो दाजाँ, फ्रांस; प्रो. टी.एस. मैक्सवेल, जर्मनी; डा. जी.डी. सोन्थाइमर, जर्मनी; प्रो. फ्रिट्स स्टाल, संयुक्त राज्य अमेरिका; डा. आइरीन जे. विंटर, संयुक्त राज्य अमेरिका; डा. बेट्टिना बौमेर, डा. एम.ए. ढाकी, प्रो. बी.एन. गोस्वामी, डा. के. कुंजुनी राजा, डा. एस.सी. मलिक, डा. आर. नागस्वामी, डा. के.वी. रमेश, डा. प्रेमलता शर्मा, प्रो. वागीश शुक्ल, डा. वी.वी. सुब्बराय, डा. आर. तिरुमलै, डा. के.डी. त्रिपाठी, डा. पशचंद्रये शीतांशु और डा. आर.सी. द्विवेदी – सभी भारत से।

सात दिवसीय इस कार्यशाला के दौरान, विश्व के सभी उपलब्ध विश्वकोशों की समीक्षा की गई ताकि केन्द्र की इस परियोजना के व्याप्त क्षेत्र और उसमें शामिल किए जाने वाले विषयों की रूपरेखा तैयार की जा सके।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पनात्मक योजना उसके अन्य बहुत से अनुसंधान तथा प्रकाशन के कार्यक्रमों को दृष्टिगत रखते हुए, प्रस्तावित कला विश्वकोश कला के प्रति अपने दृष्टिकोण तथा अपने रूप (फॉर्मेट) में भी अपने निकट पूर्ववर्ती विश्वकोशों से भिन्न होगा। मोटे तौर पर, यह सर्जनात्मक अनुभवों के साथ-साथ सभी सांस्कृतिक क्षेत्रों की कलाओं का अन्वेषण करेगा। ऐसी परंपरागत वितंडावादी मनोवृत्तियों से कलाओं को संकल्पना को छुटकारा दिला कर, जिन्होंने अपनी अतिविशेषज्ञता के कारण कला को जीवन में केन्द्रीय स्थिति से सदा विस्थापित किए रखा है, यह विश्वकोश जीवंत रूप में सर्जनात्मक कलाओं के बोध पर बल देगा। इससे केन्द्र के इस विचार का पता चलता है कि पाठ, संदर्भ/विषयवस्तु और अभिव्यक्ति के स्तरों पर सर्जन की प्रक्रिया के समग्र पर्यावरण को समुचित महत्व दिया जाए।

III. जनपद संपदा

जनपद संपदा प्रभाग कलाकोश प्रभाग के कार्यक्रमों के रूप में कार्य करता है। इसका ध्यान पाठ और संदर्भ के बजाए भारत और एशिया की जनजातीय एवं ग्रामीण संस्कृतियों की समृद्ध तथा विविध रूप-रंगों में उपलब्ध धरोहर की कलात्मक अभिव्यक्तियों पर केन्द्रित रहता है। कला और संस्कृति के क्षेत्र में निरंतरता एवं परिवर्तनशीलता बराबर बनी रही है। बीच-बीच में अनेक छोटे-बड़े सांस्कृतिक आंदोलन होते रहे हैं, जिनके द्वारा अधिक कठोर, निर्जीव गतिहीन तथा संहिताबद्ध परंपराओं को, जिन्हें 'शास्त्रीय' कहा जाता है, अपने कायाकल्प के लिए प्रेरणा मिलती रही है और इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में नवीकरण की प्रक्रिया बराबर चालू रही है। कलात्मक अभिव्यक्ति जीवन चक्र तथा जीवन संचालन का अभिन्न अंग है। यह अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में छोटे या बड़े पैमाने पर अनेक रूप और प्रकार के मेलों और उत्सवों के माध्यम से सामूहिक तौर पर बारहों महीने होती रही है। आज भी ये मेले महोत्सव अपनी सजीवता और चहल-पहल के लिए तो खूब जाने माने जाते हैं, पर अब तक उनको विश्व के समग्र रूप की सजीव निरंतरता को अभिव्यक्त करने वाली संपूर्णता की बजाए अलग-अलग टुकड़ों में ही देखा गया है।

जनपद संपदा प्रभाग के अनुसंधान तथा अन्य कार्यकलापों का उद्देश्य इन कलाओं को उनके आर्थिक-सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक संदर्भों में पुनः स्थापित करना और भारतीय समाज तथा संस्कृति के विकास में उनके योगदान को उजागर करना है। उन्हें पाठ्य परंपराओं की अतिरिक्त या उपधारा नहीं समझा जा रहा है। हालांकि मौखिक परंपराओं पर

जोर दिया जा रहा है, पर लिखित परंपराओं और सिद्धांत पक्ष की भी उपेक्षा नहीं की जा रही है। एक बार फिर सिद्धांत पक्ष तथा व्यवहार पक्ष, पाठ्य तथा मौखिक, शाब्दिक, दृश्य तथा गत्यात्मक सभी पक्षों को एक तात्त्विक पूर्ण के रूप में देखा जा रहा है, न कि समेकित किए जाने वाले अलग-अलग खंडों के रूप में। कार्यक्रम प्रसार करने के मामले में जन, लोक, देश, लौकिक, मौखिक जैसे शब्दों को महत्व दिया जा रहा है।

इस प्रभाग के कार्यक्रमों का विभाजन इस प्रकार है :-

क. *मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह* – इन महत्वपूर्ण संग्रहों में मूर्त, अनुकृतियां तथा फ्रोग्राफिक प्रतिलिपियां शामिल होंगी, जो बुनियादी स्रोत सामग्री के रूप में इकट्ठी की जाएंगी।

ख. *बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां* – इन कार्यक्रमों के अंतर्गत दो दीर्घाएं स्थापित की जाएंगी, यानी आदिदृश्य अर्थात भारत तथा अन्य देशों की शैल कला और आदिनाद अर्थात् ध्वनि संगीत और वाद्य यंत्र ये दृष्टि एवं श्रवण (नेत्र तथा कान संबंधी ज्ञानेंद्रियों से संबंधित आधारभूत) संकल्पनाएं होंगी। अन्य कार्यक्रमों में किसी विशेष या लघु क्षेत्र के संबंध में परिवर्तनशील बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां या कार्यक्रम होंगे।

ग. *जीवन शैली अध्ययन* - ये कार्यक्रम आगे (1) लोक परंपरा और (2) क्षेत्र संपदा नामक दो भागों में बंटे है, इन कार्यक्रमों के परिणाम ग्रंथों, टेपों, वीडियो फिल्मों और मानचित्रात्मक अध्ययनों के रूप में प्रस्तुत किए जाएंगे।

घ. *क्षेत्र संपदा।*

ङ. *बाल जगत* – इस अनुभाग के कार्यक्रम बच्चों को जनजातीय और लोक संस्कृतियों की समृद्ध धरोहर से परिचित कराएंगे।

च. *प्रयोगिक रंगशाला (थियेटर) एवं स्टूडियो* – यह वह स्थल होगा जहां मिल कर सामूहिक कार्यकलाप तथा नए-नए प्रयोग किए जाएंगे। यहीं पर कार्यालय के आंतरिक प्रलेखन कार्य के लिए स्टूडियो होगा।

छ. *संरक्षण प्रयोगशालाएं* - ये प्रयोगशालाएं कलाकृतियों तथा कला शिल्पों के संरक्षण का कार्य करेंगी।

कार्यक्रम क : मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित मानव जाति वर्णनात्मक संग्रह प्राप्ति किए गए :

1. *वारली चित्रकारियां* : कागज तथा कपड़े पर की गई वारली चित्रकारियों का एक कोड संग्रह अध्ययन के प्रयोजनों के लिए तैयार किया गया है और उसका प्रलेखन कार्य भी पूरा हो चुका है।
2. *बस्तर कांस्य* : बस्तर क्षेत्र के गौंड कबीले द्वारा बनाए गए कुछ कांस्य नमूने : गौंड कारीगर द्वार तैयार की गई प्रत्येक आकृति का विवरण प्राप्त कर लिया गया है।
3. *पुतलिकाएं* : यक्षगान की पैरियोनेटी पुतलियां प्रतिष्ठित लेखक तथा उत्कृष्ट रंगकर्मी श्री बी.वी. कारंत द्वारा भेंट की गईं।

शोध कार्यात्मक निम्नलिखित परियोजनाएं प्रारंभ की गई :-

1. पूर्वी भारत में ईसाई भजन विषय की प्रायोगिक परियोजना प्रारंभ की गई जिस का उद्देश्य ईसाई भजनों स्तोत्रों की रेकार्डिंग करना और उन पर भारतीय संगीत के प्रभाव का पता लगाना है। यह काम सुश्री बुलबुल सरकार द्वारा कलकत्ता में किया गया, जो पहले आकशवाणी में कार्यरत थीं। प्रत्येक भजन के संबंध में श्रव्य कैसेटों तथा डेटाशीटों के साथ संक्षिप्त रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है। भजन संबंधी डेटा को कंप्यूटरबद्ध किया जा रहा है।

   इस प्रायोगिक परियोजना के लिए सहयोजित कुछ महत्वपूर्ण ईसाई संस्थाएं तथा परामर्शदाता विद्वानों/विशेषज्ञों के नाम ये हैं :-

चिरतबनी के फादर गैसटन रोबर्ज, प्रभु जीसुए गिरिजा के फादर जोन एंजलबर्ट, बिहाला स्थित ऑक्सफोर्ड मिशन के फादर थियोडोर मैथिडोर मैथियासन, बिशप कालेज, कलकत्ता के रेवरेंड मार्गरेट मैकग्रेगर। जिन अन्य विद्वानों से परामर्श लिया गया वे थे : श्री सुनील दत्त, श्री निर्मल पांडे, श्री कल्याण बैनर्जी और (स्व.) पैस्टर मार्क बंटेन।

2. **ब्रह्मो संगीत** – राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान रचित ब्रह्मो संगीत के प्रलेखन की एक परियोजना नवम्बर, 1989 में शुरू की गई थी। यह सुश्री श्रीलेखा बसु द्वारा संपन्न की जानी थी। इसका क्षेत्र कार्य पूरा हो चुका है और डेटा कंप्यूटरीकरण के लिए फॉरमेट में दर्ज किए जा रहे हैं। इसकी विश्लेषणात्मक रिपोर्ट की अभी प्रतीक्षा है।

   इस परियोजना में सहयोजित विद्वानों/विशेषज्ञों तथा संस्थाओं के नाम ये हैं :–

   रवीन्द्र भवन के डा. एस. घोष, शांति निकेतन के श्री गौरा सर्वाधिकारी, श्रीमती कोनिका बैनर्जी, श्रीमती नीलिमा सेन, साधारण ब्रह्मो समाज पुस्तकालय, कलकत्ता के डा. दिलीप विश्वास, आकाशवाणी कलकत्ता के विमन घोष और रवीन्द्र भवन, कलकत्ता के श्री सुभाष चौधरी।

3. **राबारी परियोजना** : विलक्षण जीवन शैलियों वाली जनजातियों/समुदायों पर मानवजाति वर्णनात्मक प्रबंधों (मोनोग्राफ) की एक श्रृंखला प्रकाशित करने का प्रस्ताव है। इस श्रृंखला को 'थ्रू फोटोग्राफर्स आइज' (छायाचित्रकार की आंखों के माध्यम से) कहा जाएगा। इस श्रृंखला का पहला प्रबंध राबारियों पर है, जिसके के लिए फोटो तथा लेख तैयार करने का काम संयुक्त राज्य अमेरिका में इटली के राजदूत श्री फ्रान्चेस्को द औराजी फ्लावोनी द्वारा किया गया है।

इस प्रबंध की ग्रंथसूची तैयार करने के लिए, अनेक संस्थाओं/पुस्तकालयों को सहयोजित किया गया था। उनमें उल्लेखनीय हैं : भारतीय जनगणना विभाग, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (कलकत्ता), भारतीय सर्वेक्षण (देहरादून), जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। जिन विद्वानों/अध्येताओं की सहायता ली गई वे हैं : डा. टी.के. नाइक, श्री आर.के. गुलाटी, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिम क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर, श्री एस. बोस, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता, श्री ए.के. श्रीवास्तव, सहायक पुस्तकाध्यक्ष, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

केन्द्र की इसी परियोजना का एक पूरक कार्यक्रम है उन समुदायों की जीवन शैलियों को यथासंभव पूरी तरह लेखबद्ध करना जिनमें कार्य और कला के बीच स्पष्ट भेद नहीं किया जा सकता। अभी तक कलात्मक अभिव्यक्ति के अंतिम स्तर का ही प्रलेखन किया जा सका है और उन पूर्ववर्ती कर्मकाण्डों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है जो अंततोगत्वा उत्सव का रूप धारण करते हैं। पूर्वोत्तर भारत में इस तरह के बहुत से महत्वपूर्ण उत्सव हैं। उनमें से कुछ के लिए तो जीवनशैली में हो रहे परिवर्तनों तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण लुप्त होने का खतरा पैदा हो गया है।

गारो समुदाय की जीवन शैली का छायांकन करने की एक परियोजना के श्रीगणेश के साथ इस दिशा में कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। यह फिल्म गारोलोगों को झूम खेती की पद्धतियों को प्रमुखता देते हुए वांगला नृत्य के साथ समाप्त होगी। यह फिल्म पूर्वोत्तर भारत के विख्यात मानवविज्ञानी डा. डी.एन. मजूमदार के मार्गदर्शन में श्री बप्पा राय द्वारा बनाई जा रही है।

कार्यक्रम ख : बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियां तथा गतिविधियां

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रस्तुतियों तथा गतिविधियों का उद्देश्य पिछले हजारों वर्षों के दौरान भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत की गई कला सामग्री से जनता को अवगत कराना है। दो स्थायी प्रदर्शनियां स्थापित की जाएंगी जो विशेष विषयों तथा क्षेत्रों संबंधी अन्य कार्यक्रमों के लिए पृष्ठभूमि का काम करेंगी। प्रदर्शनियों के नाम हैं :–

1. आदि दृश्य, और 2. आदि श्रव्य।

आदिदृश्य दीर्घा में भारत की प्रागैतिहासिक शैल कला तथा विश्व के अन्य भागों से प्राप्त प्रतिनिधिक नमूने प्रदर्शित किए जाएंगे। यहां पहली बार बताया जाएगा कि शैल कला (रॉक आर्ट) एकमात्र 'कर्मकांड' या 'जादूटोने' का ही सूचन नहीं समझा जाना चाहिए। यहां उन अनुकृतियों को प्रदर्शित किया जाएगा जो सर्वप्रथम, चित्रकारी या रेखाचित्र के मूल संदर्भ को सही करके प्रस्तुत करेंगी। दूसरे, उन अनुकृतियों को बिना सोचे समझे शिकारी जीवन, प्रारंभिक खेती तथा व्यवस्थित कृषि की विकास अवस्थाओं की ओर पीछे न ढकेलते हुए उनका काल सही-सही बतलाने का प्रयत्न किया जाएगा। यहां इस कला को स्वतः स्पष्ट या सुबोध रूप में बताने की बजाए उसके लाक्षणिक गुप्त संकेतों को जनता के लिए स्पष्ट किया जाएगा। पुरातत्वीय तथ्यों तथा कालक्रम आदि के संदर्भ में उस कला के असली अर्थ को समझने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही प्रागैतिहासिक कला और समकालीन जन-जातीय कलाओं के पारस्परिक संबंध को प्रस्तुत किया जाएगा।

इसी प्रकार आदिश्रव्य दीर्घा का कार्य भी भारत में संगीत के कालक्रमिक विकास को दिखाने के लिए प्राचीन वाद्य यंत्रों के संग्रह के प्रदर्शन तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह एक 'नाद आकाश' (साउंडस्पेस) के माध्यम से मौखिक संगीत और वाद्यों को अधिक महत्व देगी और जीवन के संचालन में नाद और संगीत के महत्व को दर्शाएगी। इस प्रकार संगीत को दिक् और काल के संदर्भ में सजीव करने का प्रयास किया जाएगा।

उक्त दो प्रदर्शनी दीर्घाओं के अतिरिक्त, जो दृष्टि तथा नाद के समग्रवादी उपयोग के माध्यम से प्राचीन भूत को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगी और इसीलिए उनके ये नाम (आदिदृश्य और आदिनाद) दिए गए हैं, और भी कई गतिविधियां/प्रस्तुतियां/प्रदर्शन होंगे जिनके द्वारा प्राचीन कला व शिल्पकृतियों के साथ-साथ उसी कला या शिल्प के वर्तमान स्वरूप को भी प्रस्तुत किया जाएगा। ये कार्यक्रम समय-समय पर बदलते रहेंगे और इन के अंतर्गत भारत के और बाहर से भी कला, शिल्प, संगीत, नृत्य के व्यावहारिक निरूपण प्रदर्शन प्रस्तुत किए जाएंगे जिनसे इनके अंतिम रूपों का ही नहीं बल्कि उन्हें तैयार करने की प्रक्रिया का भी पता चलेगा।

आदिदृश्य - शैलकला दीर्घा

आलोच्य वर्ष के दौरान आदिदृश्य दीर्घा के कार्य में जो प्रगति हुई उसका विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

अ. संकल्पनात्मक योजना

दीर्घा की जो रूपरेखा तैयार की गई है उसके तीन प्रमुख अंग हैं : दीर्घा के सामान्य लक्ष्य, इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की रीति और वांछित उपलब्धि, जिन को अनुसंधान के चार अलग मॉड्यूलों में विभाजित किया गया है :

क. शैलकला अभिलेखागार : इस में प्राथमिक तथा गौण ग्रंथसूची संबंधी तथा मानचित्रात्मक सामग्री के लिए डेटाबेस रखा जाएगा। इससे आगे चल कर क्षेत्रवार तथा स्थलवार ग्रंथसूचियां प्रकाशित की जाएंगी।

ख. कार्यालयांतर्गत अनुसंधान परियोजनाएं : इनका उद्देश्य शैलकला के नए भंडारों का पता लगाना है। ये परियोजनाएं उत्तराखंड तथा मणिपुर में पूरी की जा चुकी हैं। इन अनुसंधान कार्यों के महत्वपूर्ण निष्कर्ष इस दीर्घा के प्रकाशनों के रूप में प्रस्तुत किए जाएंगे। प्राचीन विश्व की शैलकला पर आयोजित डारविन कांग्रेस परिचर्चा के कार्यवृत्त को भी प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

ग. दीर्घा प्रदर्शन : शैल कला की एक स्थायी गतिशील प्रदर्शन व्यवस्था तैयार करने के उद्देश्य से दृश्य सामग्री का संग्रह कार्य शुरू किया जा चुका है। विभिन्न देशों के बहुत से विद्वानों को इस कार्य में सहयोजित किया गया है और शैल कला की पुनर्रचना के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी की खोज की जा रही है। आगे चलकर इससे अपने आप एक परिपूर्ण प्रदर्शन दीर्घा बन जाएगी।

घ. कृत्रिम बौद्धिक साधन : अन्य माड्यूलों में तो शोध कार्य परंपरागत साधनों के माध्यम से ही किया जाएगा, लेकिन इस माड्यूल में शैल कला को व्याख्यापित करने के लिए यांत्रिक बौद्धिक साधनों का उपयोग किया जाएगा। भीमबेटका पर कार्यालय के अंदर ही संपन्न की जाने वाली एक छोटी सी परियोजना की रूपरेखा तैयार की गई है। इसका उद्देश्य दृश्य

तथा प्रकाशित सामग्री का संग्रह करना है जिससे आगे चलकर उस अंचल की शैल कला पर डेटाबेस तैयार हो जाएगा। इस जानकारी से एक ऐसा ज्ञान का आधार बन जाएगा जिस के सहारे निर्वचन एवं प्रतिपादन के लिए एक विशिष्ट कार्यक्रम लिखा जा सकता है।

जहां तक दीर्घा प्रदर्शन का संबंध है, इस दीर्घा में प्रदर्शनीय वस्तुएं कैसे रखी जाएंगी इसका एक कच्चा खाका तैयार किया जा चुका है और अब इस प्रदर्शन व्यवस्था को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

य. अकादमिक कार्यकलाप

क. ग्रंथसूची : इस अकादमिक कार्य में भारत तथा विश्व के ऐसे देशों से ग्रंथसूची संबंधी सामग्री इकट्ठी करने का काम शामिल है जहां शैल कला उपलब्ध है, जैसे आस्ट्रेलिया, यूरोप, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली, और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, दिल्ली में शैल कला की पुस्तकों के सर्वेक्षण का कार्य समाप्त हो चुका है। संदर्भ कार्ड तैयार किए जा चुके हैं।

ख. सामग्री : उत्तराखंड तथा मणिपुर की क्षेत्र-परियोजनाओं से पर्याप्त डेटा प्राप्त हुआ है। उत्तराखंड से प्राप्त सामग्री प्राथमिक क्षेत्र डेटा तथा कुछ चुने हुए शैल चित्रों की मौलिक जलरंगीन प्रतिकृतियों के रूप में है। कुछ शैल चित्रों की रंगीन प्रतिकृतियां भी है। इसके अलावा इस सामग्री में रंगीन स्लाइडें तथा श्याम-श्वेत फोटो भी है। मणिपुर वाली सामग्री भी प्राथमिक किस्म की ही है और अधिकतर रंगीन पारदर्शियों (ट्रान्सपरेन्सी) तथा श्याम-श्वेत फोटो के रूप में है।

ग. संग्रह : आलोच्य वर्ष के दौरान, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका, यूरोप और उत्तरी अमेरिका से शैल कला की 200 स्लाइडें प्राप्त की गई हैं। ये सभी स्लाइडें शैल कला संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय परिसंघ के संयोजक प्रो. आर.जी. बेडनारिक द्वारा दी गई है। उस संग्रह को 'रोबर्ट बेडनारिक संग्रह' नाम दिया गया है।

घ. क्षेत्र कार्य : शैल कला के अनुसंधान तथा प्रलेखन के लिए केन्द्र के अकादमिक कार्मिकों ने दो क्षेत्र यात्राएं कीं। पहली मध्य प्रदेश में भीमबेटका के शैल कुटीरों की और दूसरी चंबल घाटी के मानपुरा इलाके में स्थित शैल कुटीरों की, जिसका उद्देश्य पांच भिन्न-भिन्न स्थलों अर्थात् चट्टानेश्वर चतुर्भुजनाथ नाला, गांधी सागर, रावतभाटा और गोडी का अध्ययन करना था। दूसरी यात्रा के दौरान उपर्युक्त स्थलों पर स्थित शैल कला की वीडियो फिल्म भी बनाई गई।

ङ. प्रकाशन : 1989 की डारविन कांग्रेस में 'प्राचीन विश्व की शैल कला' विषय पर हुई परिचर्चा का कार्यवृत्त प्रकाशित करने के लिए अनुरोध प्राप्त हुआ। तदनुसार परिचर्चा के कार्यवृत्त और उत्तराखंड परियोजना पर तैयार किए गए प्रबंध को मौलिक शैल कला ग्रंथों की प्रकाशन माला के अंतर्गत प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

च. आयोजित गतिविधियां : वर्ष 1989-90 के दौरान प्रागैतिहासिक शैल कला की फिल्में प्रदर्शित की गईं। आस्ट्रेलिया सरकार के सचिव श्री डब्लू.जे. ग्रे और आस्ट्रेलिया के ही शैल कला संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय परिसंघ के अध्यक्ष प्रो. आर.जी. बेडनारिक दोनों इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में पधारे और उन्होंने शैल कला पर सार्वजनिक भाषण दिए जिन्हें सुनने के लिए इस कला के विशेषज्ञ उपस्थित थे।

आदिदृश्य के लिए अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के जिन विद्वानों की विशेषता का लाभ उठाया गया वे थे : डा. एम.सी. जोशी, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण; डा. वाई. मठपाल, लोक कला संग्रहालय, भीमताल; डा. बी.एन. मिश्र, डेकन कालेज, पुणे; डा. चट्टोपाध्याय, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डा. गिरिराज कुमार और डा. बी.एन. सरस्वती, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली। इन भारतीय विद्वानों के अलावा विदेशी विद्वानों से भी परामर्श लिया गया। उनमें श्री डब्लू.जे. ग्रे तथा प्रो. आर.जी. बेडनारिक के अलावा, प्रो. मिचल लॉरब्लैचेट, प्रो. जीन कलौड गारडेन, डा. जे. क्लोटिस (सभी फ्रांस से) श्री चार्ल्स गौर्ड (संयुक्त राज्य अमेरिका से) और श्रीमती पेग्गी हापर (आस्ट्रेलिया से) थे।

आदिदृश्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने निम्नलिखित भारतीय तथा विदेशी संस्थाओं से संपर्क रखा :-

आदिवासी कार्य विभाग, आस्ट्रेलिया सरकार; आस्ट्रेलियाई शैल कला अनुसंधान संघ, विक्टोरिया; सेंटर डि प्रीहिस्टोरिक हू पेच, पाले, फ्रांस; सेंटर नेशनल डि ला रिसर्च साईंटिफिक, फ्रांस; त्रोमसो म्यूजियम, त्रोमसो विश्वविद्यालय, नार्वे; सेंटर कामुनो डि स्टडी प्रीहिस्टोरिकी, इटली; दयालबाग संस्थान, कला संकाय, आगरा; मटुआ संग्रहालय, इम्फाल, मणिपुर; लोक संस्कृति संग्रहालय, भीमताल, उत्तर प्रदेश; मानव संग्रहालय, भोपाल; राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली; भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली; और डेकन कालेज, पुणे।

आदि श्रव्य-नाद दीर्घा

आदिश्रव्य-नाद एवं नाद की अभिव्यक्तियों/रूपों की एक स्थायी दीर्घा होगी। यह कार्यक्रम-ख के अंतर्गत प्रदर्शन का दूसरा माध्यम होगी। इस संबंध में निम्नलिखित कार्य किया गया :-

क. संकल्पनात्मक योजना प्रस्तावित दीर्घा की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य से विद्वानों के साथ प्रारंभिक विचार विमर्श किया गया।

ख. क्षेत्र दौरा विख्यात संगीत शास्त्री श्री राघव मेनन ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से सोवियत रूस के गिलंका संग्रहालय का दौरा किया और एक रिपोर्ट तथा दीर्घा के लिए योजना प्रस्तुत की।

ग. दीर्घा का डिजाइन रूसी कवि मिखाइल टेरिवरदीव से दीर्घा प्रदर्शन की एक योजना प्राप्त हुई जिसमें गतिशील प्रदर्शन के लिए विभिन्न तत्वों की रूपरेखा दी गई थी। इस संकल्पना की व्यवहार्यता की जांच करने के लिए कार्यालय के अंतर्गत अनेक बार चर्चाएं की गई।

संकल्पनात्मक योजना तैयार करने के संबंध में जिन महत्वपूर्ण विद्वानों से संपर्क किया गया तथा जिनसे योगदान मिला वे हैं : डा. राघव मेनन, सोवियत रूस के श्री मिखाइल टेरिवारदीव, पश्चिम जर्मनी के श्री पीटर म्यूलर पैंक और भारतीय अध्ययन के अमेरिकी संस्थान, नई दिल्ली के श्री बारबार्ड बेल।

घ. गतिविधियां/प्रस्तुतियां आदिम जाति सेवक संघ द्वारा 'नेहरू तथा जनजातीय नीति' विषय पर आयोजित एक संगोष्ठी के अवसर पर नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय के परिसर में भारत की जनजातीय भाषाओं की 1000 से अधिक पुस्तकों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन नागालैंड की विख्यात महिला स्वतंत्रता सेनानी रानी माइदिनलिऊ ने किया। भारत के सभी भागों से चुनी हुई प्रतिनिधि पुस्तकें इकट्ठी करके प्रदर्शित की गई। प्रदर्शनी के बाद उन्हें संदर्भ पुस्तकालय की पुस्तकों में शामिल कर लिया गया।

भारत में जनजातीय भाषाओं की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाने के लिए भारत की उनके संस्थाओं से सहयोग प्राप्त करने के लिए संपर्क किया गया। उनमें से कुछ प्रमुख थीं : भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता; गुजरात विद्यापीठ का जनजातीय अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान, अहमदाबाद; भारतीय आदिम जाति सेवक संघ, नई दिल्ली; नागालैंड भाषा परिषद, कोहिमा, नागालैंड; बाबा तिलका पुस्तकालय, मयूरभंज; और जनजातीय बोलियां तथा संस्कृति अकादमी (जनजातीय कल्याण विभाग) उड़ीसा सरकार; कुकी साहित्य समिति, मणिपुर; विकासशील समाज अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली; जनजातीय अनुसंधान तथा प्रशिक्षण केन्द्र, सिंहभूम, बिहार; और भारतीय भाषाओं का केन्द्रीय संस्थान, मैसूर।

जनजातीय अध्ययन के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा प्रदर्शनी की प्रशंसा की गई। प्रदर्शनी में रखी गई आगंतुक पंजी से उद्धृत कुछ सम्मतियां नीचे दी जा रही हैं :-

"अति उत्तम श्रीगणेश। इसे परिवर्द्धित करके एक स्थायी प्रदर्शनी का रूप दिया जाए।

– डा. बी.पी. पट्टनायक

"जनजातीय भाषाओं के विषय में अब तक जो कुछ देखा उनमें सर्वोत्तम। उन सबके लिए एक अच्छी शुरूआत जो इन्हें पढ़ना चाहते हैं। आशा है हम इन्हें बाजार में उपलब्ध करा सकें। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र यह संग्रह कार्य बराबर चालू रखे।"

– श्री हिमांशु के ठांडा

"यह पथप्रदर्शक प्रदर्शनी हमें उस नक्शागरण के निकट संपर्क में लाती है जो इस समय हमारे जनजातीय समुदायों में आ रहा है, और हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं।"

– श्री लोकेन्द्र सिंह (भूतपूर्व सदस्य, योजना आयोग)

"अति उत्तम संग्रह, ज्ञानवर्द्धक तथा प्रेरणाप्रद।"

– डा. गोपालसिंह, राज्यपाल, नागालैंड

"भारत की जनजातीय भाषाओं में उपलब्ध पुस्तकों की इस प्रदर्शनी के लिए किए गए कार्यों की हम प्रशंसा करते हैं।"

– स्वामी गोकुलानन्द, रामकृष्ण मिशन

"एक बढ़िया शुरूआत। आशा है शीघ्र ही ऐसी ही दूसरी प्रदर्शनी इससे भी बड़े पैमाने पर लगाई जाएगी।"

– डा. सी. चोनजिक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

"इस प्रकार की प्रदर्शनी से हमारे देश के जनजातीय लोगों के सामाजिक इतिहास तथा दशा को समझने का अवसर मिलेगा। इससे जनजातीय लोगों में विश्वास और सद्भाव को बढ़ावा मिलेगा। और वे राष्ट्रीय मुख्यधारा में सम्मिलित होने का प्रयत्न करेंगे। इन पुस्तकों तथा साहित्य से इन लोगों की जटिल एवं संश्लिष्ट प्रकृति को समझने में सहायता मिलती है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने निस्संदेह अच्छा काम किया है। और भी प्रदर्शनियां आयोजित की जाएं।"

– श्री एल.एफ. लुजिंग (जनजातीय छात्र)

"एक बड़ा प्रयास है, और भी होने चाहिए।"

– डा. एन.बाई. मजूमदार

"बहुत उपयोगी।"

– श्री विपिन ओझा, पटना विश्वविद्यालय

"जनजातीय पुस्तकों तथा अन्य सामग्री की अति उत्तम प्रदर्शनी। बहुत ही उपयोगी।"

– श्री डब्लू.बी. डेवीस

"बधाइयां।"

– डा. एम. डरकैच, यूनेस्को

कार्यक्रम ग : जीवनशैली अध्ययन

अब तक जनजातीय और लोक संस्कृति पर जो भी अध्ययन हुआ है वह सब अधिकतर एक ही दिशा में और एकांगी ही हुआ है, चाहे वह मानवशास्त्रीय दृष्टि से किया गया हो अथवा समाज-विज्ञान, अर्थशास्त्र, सामाजिक, राजनीतिक, इतिहास या कला इतिहास की दृष्टि से। उन विषयों ने प्रत्येक कला के सार्वजनीक तथ्यों या बहुपक्षीय/बहुस्तरीय स्वरूप और विलक्षणता का बहुत कम ध्यान रखा है। जनपद संपदा प्रभाग एक नया दृष्टिकोण, एक नई पद्धति अपनाना चाहता है, और वर्तमान पद्धतियों की जांच करके जीवन शैलियों के अध्ययन के लिए वैकल्पिक मॉडल तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि जीवन एकल आयामों या इकाइयों में बंटा हुआ नहीं है और न ही कोई एक मॉडल किसी समुदाय के सांस्कृतिक जीवन की संपूर्ण झांकी प्रस्तुत कर सकता है। यह दृष्टिकोण संस्कृति को एक सीमांकित स्थान में एक बहुआयामी प्रणाली मानता है।

इन अध्ययनों का उद्देश्य प्राकृतिक परिवेश, दैनिक जनजीवन, वार्षिक पंचांग तथा जीवन चक्र, विश्व दृष्टिकोण, ब्रह्मांड विज्ञान, सामाजिक संरचना, ज्ञान एवं कौशल, पारंपरिक प्रौद्योगिकी और कला अभिव्यक्तियों के बीच कई प्रकार के संबंध जोड़ना है। ये अध्ययन स्वरूप में बहुविषयक है और कलाओं के क्षेत्र में कौशलों और तकनीकों के अन्योन्याश्रय, भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर एक दूसरे के असर और जनजातीय, ग्रमीण तथा शहरी परंपराओं मौखिक या लिखित के पारस्परिक प्रभाव को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों को सामने रखकर और बहुविषयक रीति अपनाते हुए, चार प्रायोगिक परियोजनाएं प्रारंभ की गई है। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वान देश की विभिन्न संस्थाओं से लिए गए बहुविषयक अध्ययन दलों के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित कर रहे है। उन लोगों के साथ एक सार्थक संवाद स्थापित किया गया है जो जातीय वनस्पति विज्ञान, जातीय चिकित्सा/आयुर्विज्ञान, हिमालय अध्ययन तथा समुद्र विज्ञान के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

इन अध्ययनों से संबंधित प्रथम कार्य में यह प्रगति हुई है कि प्राथमिक एवं गौण स्रोतों से बहुभाषी ग्रंथसूची विकसित की जा चुकी है। कुछ परियोजनाओं के मामले में, विशेष रूप से संथालों तथा राजस्थान के बाजरा समुदायों के संबंध में, कतिपय आधारभूत संकल्पनाओं का एक शब्दकोश तैयार किया गया है। प्रारंभिक अवस्था में ही इस शब्दकोश से जीवन प्रपंच और कलात्मक अभिव्यक्ति के पारस्परिक संबंधों के स्वरूप का पता चलता है।

मूल पंचभूतों से संबंधित कुछ पारिभाषिक शब्दों के विषय में एक कंप्यूटरीकृत डेटाबेस विकसित किया गया है। परियोजनाओं का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

1. संथाल परियोजना

1234 से भी अधिक संदर्भों के साथ एक बहुभाषी ग्रंथ सूची संकलित तथा कंप्यूटरीकृत की जा चुकी है।

पूर्वी अंचल के मानचित्र तैयार किए गए जिनमें भूआकृति तथा जल निकासी, प्रशासनिक प्रभाग और संथालों की आबादी के फैलाव की दर्शाया गया है।

शब्दकोश के निर्माण कार्य के लिए जल तथा अग्नि से संबंधित शब्दों की उपलब्ध कोशों में से निकाला गया और कंप्यूटर के प्रयोजनों के लिए श्रेणीबद्ध किया गया। पुन: प्राप्ति व उपयोग के प्रयोजन के लिए सॉफ्टवेयर भी विकसित किया गया। अगले वर्ष भौतिक पर्यावरण संबंधी माड्यूल का काम हाथ में लिया जाएगा।

संथाल परियोजना के काम में बहुत से महत्वपूर्ण पुस्तकालयों को सहयोजित किया गया है। उदाहरणार्थ, दिल्ली विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, राष्ट्रीय संग्रहालय, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ – सभी दिल्ली में, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, कलकत्ता, विश्वभारती विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन और लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

जिन महत्वपूर्ण विद्वानों से परामर्श लिया गया उनमें से कुछ है :

डा. पी.सी. हेम्ब्रेम, दूरदर्शन, नई दिल्ली; डा. सहदेव मरांडी, सिंहभूम, बिहार; डा. ओंकार प्रसाद, शांति निकेतन; डा. अतमास अली और डा. बुद्धदेव चौधरी।

2. मणिपुर के मेइती

मणिपुर के मेइती लोगों की जीवन शैली के अध्ययन का कार्य उनके वार्षिक नृत्योत्सव 'लाई हरौबा' के फिल्मांकन के साथ प्रारंभ किया गया। श्री अरिबाम श्याम शर्मा इस फिल्म का निर्देशन कर रहे है। वर्ष के दौरान चार भिन्न-भिन्न स्थलों पर इस उत्सव की शूटिंग की गई जिसमें 100 घंटे से भी अधिक समय तक फिल्मांकन तथा वीडियो प्रलेखन का कार्य साथ-साथ चलता रहा। निश्चित फोटो भी लिए गए। उत्सव के दौरान मणिपुरी भाषा में गाए गए गीतों तथा मंत्रों की भी स्टूडियो रेकार्डिंग की गई।

3. बाजरा परियोजना

पश्चिमी शुष्क अंचल में, राजस्थान के कुछ बाजरा उगाने वाले जनसमुदायों की जीवन शैली का अध्ययन उनकी खेती की पद्धतियों के माध्यम से किया जा रहा है।

जोधपुर में स्थायन संस्थान के कोमल कोठारी के नेतृत्व में जिन्हें इस बाजरा परियोजना का काम सौंपा गया है, 7-9

अगस्त, 1989 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। उसका उद्देश्य राजस्थान के बाजरा उगाने वाले क्षेत्र में, भूमि, वायु, वनस्पति और जल आदि के लिए प्रयुक्त स्थानीय शब्दों का पता लगाना था। इस कार्यशाला में अनेक प्रश्नों पर विचार किया गया जैसे :-

लोग भूमि तथा भूगोल को कैसे परिभाषित करते हैं ?

स्थानीय विशिष्ट पारिभाषिक शब्द क्या हैं और वे क्या इंगित करते हैं ? जीवन शैली में सार्थक क्रियाओं की खोज में गहरा पैठने के लिए क्या कार्यनीति अपनाई जा सकती है !

ऐसी क्रियाप्रधान शब्दावली को परिभाषित करने के लिए क्या सावधानी बरती जाए ? कार्यशाला असामान्य किस्म की थी क्योंकि यह निरक्षर किन्तु अति सुविज्ञ सूचकों (स्थानीय लोगों) और व्यावसायिक अनुसंधानकर्ताओं के बीच एक तरह की सामूहिक चर्चा में परिवर्तित हो गई।

बाजरा परियोजना में, रूपायन संस्थान के अलावा, भारतीय अध्ययनों के अमेरिकी संस्थान को भी सहयोजित किया गया है।

तदनन्तर, परियोजना हेतु भिन्न-भिन्न माड्यूल तैयार करने के लिए विचारविमर्श किया गया। पहले तीन माड्यूलों यानी बहुभाषी ग्रंथसूची, भौतिक पर्यावरण तथा मानचित्रात्मक माड्यूल का काम शुरू किया जा चुका है।

4. मुक्कुवर परियोजना

एशियाई अध्ययन के भारतीय संस्थान ने तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले के दक्षिण पश्चिम भाग में रहने वाले मछुआ समुदाय मुक्कुवर को अध्ययन के लिए चुना। वर्ष के दौरान परियोजना की ग्रंथसूची तैयार करने का काम पूरा किया गया। डा. जोन सैम्युअल इस परियोजना के निदेशक है।

5. उत्तरी कर्नाटक में मानव पारिस्थितिकी एवं लोक धरोहर विषय पर कार्यशाला

'उत्तरी कर्नाटक में मानव पारिस्थितिकी एवं लोक धरोहर' विषय पर धारवाड में दिनांक 3 नवंबर से 2 दिसंबर, 1989 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कलकत्ता; भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर; डेकन कालेज, पूणे; कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड; केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर; फ्रेंच संस्थान पांडीचेरी; एशियाई संस्थान, मद्रास और अनंतकृष्णन संस्थान, पालघाट के विद्वानों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यशाला का उद्देश्य लोक धरोहर तथा मानव पारिस्थितिकी की सामान्य दशा का अध्ययन करने के लिए समुचित रीति विकसित करना था। नौ उप-परियोजनाएं बनाई गई, जिनमें से निम्नलिखित चार को फिलहाल कार्यान्वयन के लिए चुना गया :-

क. पश्चिमी तट के समुद्री मछुआ लोगों के बीच रह कर उनकी सामान्य दशा का अध्ययन। यह अध्ययन भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, कलकत्ता के प्रो. के.सी. मलहोत्रा के नेतृत्व में किया जाएगा।

ख. 'उत्तर कन्नड़ के पवित्र उपवन तथा पवित्र वृक्ष' : यह परियोजना कर्नाटक विश्वविद्यालय के डा. एम.डी. सुभाषचन्द्रन के नेतृत्व में कार्यान्वित की जाएगी।

ग. 'वन्य इतिहास तथा कच्छ वनस्पति' की परियोजना फ्रेंच संस्थान, पांडीचेरी के डा. जैक्वूस पौचेपादास के नेतृत्व में सम्पन्न होगी।

घ. 'मानव पारिस्थितिकी तथा सांस्कृतिक धरोहर' : भारतीय वैविध्य के संदर्भ में भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर के प्रो. माधव गाडगिल इस परियोजना में नेतृत्व करेंगे।

प्रो. गाडगिल इन सभी परियोजनाओं के मुख्य समन्वयकर्ता होंगे। ये परियोजनाएं अक्तूबर, 1990 में शुरू की जानी है।

6. मैसूर क्षेत्र के लोहार

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मैसूर क्षेत्र के लोहारों पर एक परियोजना शुरू करने का विचार कर रहा है। इस अध्ययन के द्वारा ज्ञानात्मक प्रतिरूप (विश्व दृष्टि) और वास्तविक स्थिति के प्रतिरूप (जीवन शैली) के बीच के पहलुओं का

अध्ययन करने के लिए अनुसंधान की रीति विकसित करने का प्रयत्न किया जाएगा। इस कार्य के लिए पहले लोहारों द्वारा चुनी गई तकनीकी शब्दावली और बुनियादी तथा सीमित कोश का संकलन किया जाएगा और इस समुदाय के संगत सामाजिक तथा आर्थिक डेटा इकट्ठे किए जाएंगे। आलोच्य वर्ष में इस परियोजना के संबंध में प्रारंभिक कार्रवाई शुरू की जा चुकी है।

7. यूनेस्को कार्यशाला

'बहुमाध्यमिक कंप्यूटरोपयोगी प्रतेखन की सहायता से अंतरसांस्कृतिक जीवन शैलियों का अध्ययन' विषय पर 9 जनवरी से 13 जनवरी 1989 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। उसमें 11 विदेशी और 20 भारतीय विद्वानों ने भाग लिया जिनमें उल्लेखनीय है : डा. इयान होडडर, प्रो. ग्राहम चेपमैन, प्रो. शिगेहारू सुगिता, प्रो. जीन क्लौडे गार्डिन, डा. एव.के. अनसूया देवी और डा. आर. नरसिंहन। कार्यशाला का उद्घाटन प्रो. एम.जी.के. मेनन द्वारा किया गया। यूनेस्को के भारत स्थित प्रतिनिधि प्रो. हेरकैच मुख्य अतिथि थे। कार्यशाला के बाद तीन स्तरों यानी सदस्य राज्यों, यूनेस्को एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्तर पर कई सिफारिशें कार्यन्वयन के लिए उद्भूत हुई। लगभग इन सभी सिफारिशों पर अनुवर्ती कार्रवाई चालू की गई। सदस्य राज्यों से संबंधित सिफारिशों के बारे में सीधे उनसे लिखापढ़ी की जा रही है जबकि बहुत से ठोस प्रस्ताव निधि की व्यवस्था के लिए अब यूनेस्को के पास भेजे गए हैं। इन प्रस्तावों में विशेषज्ञों की एक क्षेत्रीय बैठक बुलाने की भी योजना है जिसमें बहुमाध्यमिक डेटाबेसों के प्रश्न, विशेषज्ञ प्रणालियों की भूमिका पर विचार करने के लिए एक कार्यशाला और जीवन शैली अध्ययनों के विषय में एक कार्यशाला आयोजित करने के बारे में विचार किया जाएगा।

आलोच्य वर्ष के दौरान, कार्यशाला में भाग लेने वाले बहुत से विद्वानों के संपूर्ण शोध-पत्र प्राप्त हुए। इन शोध-पत्रों के संपादन का कार्य प्रारंभ किया गया।

कार्यक्रम घ : क्षेत्र संपदा

इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि कतिपय प्रदेश/क्षेत्र समय के साथ-साथ सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते गए हैं और उनसे आकर्षित हो कर संसार के सभी भागों से लोग वहां आते रहे हैं। वे लोगों के आवागमन के मुख्य केन्द्र रहे हैं। वहां लाने और ले जाने वाली दोनों तरह की शक्तियां काम करती रही हैं। अकसर कोई मंदिर या मस्जिद वहां का भौतिक या भावनात्मक आकर्षण रहा है। अब तक ऐसे केन्द्रों का अध्ययन कालनिर्णय, इतिहास, धर्म या अर्थशास्त्र जैसे किसी एक विषय तक ही सीमित या एकांगी रहा है, सर्वसंपूर्ण नहीं, जिससे सर्जनात्मक कलाओं के क्षेत्र में बहुविध कार्यकलाप संचालित होते हैं। इसलिए क्षेत्र संपदा के अंतर्गत किसी स्थान विशेष या मंदिर और उसकी 'इकाइयों' के अध्ययन की ही कल्पना की गई, बल्कि एक केन्द्र विशेष के भक्ति विषयक, कलात्मक, भौगोलिक तथा सामाजिक पक्षों को परस्पर जोड़ने की प्रक्रिया को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया है।

(i) ब्रज-नाथद्वारा

यह परियोजना वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के साथ मिलकर कार्यान्वित की जा रही है। इस परियोजना का प्रथम चरण एक बहुभाषी ग्रंथसूची बनाने के कार्य के साथ 1988 में प्रारंभ हुआ था। समीक्षाधीन वर्ष में एक संकल्पनात्मक योजना तथा परियोजना की रूपरेखा तैयार की गई। परियोजना में निम्नलिखित कार्य (माड्यूल) शामिल होंगे।

1. बहु-भाषी ग्रंथसूची
2. भौगोलिक प्राचल (पैरामीटर) तथा अर्थ
3. स्थापत्य तथा पुरातत्वीय पक्ष, ऐतिहासिक विश्लेषण सहित।

4. मंदिर, एक जीवंत अस्तित्व के रूप में
5. मौखिक परंपराओं का प्रलेखन
6. ब्रज में मंदिर संरचना का आर्थिक-सामाजिक स्वरूप
7. कला, संगीत, नृत्य तथा पाक प्रणाली।

इन कार्यों में हुई प्रगति का ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

गौण स्रोतों से बहुभाषी ग्रंथसूची तैयार करने का प्रथम चरण 2000 से अधिक संदर्भों के साथ पूरा हो चुका है और कंप्यूटरीकरण के लिए डेटाबेस तैयार किया जा चुका है।

विद्वानों के चयन और भौगोलिक प्राचल तथा अर्घ और स्थापत्य तथा पुरातत्वीय पक्षों के माड्यूलों पर प्रारंभिक विचारविमर्श संपन्न हो चुका है। वास्तविक अध्ययन का कार्य 1991 में प्रारंभ होने की आशा है।

एक जीवंत अस्तित्व के रूप में मंदिर के प्रलेखन कार्य का श्रीगणेश नृत्य सेवा की वीडियो रेकार्डिंग के साथ हो चुका है। एक श्रव्य दृश्य अभिलेखागार बनाने का काम भी शुरू हो चुका है और मौजूदा सामग्री को सूचीबद्ध करने का काम प्रगति पर है। इस कार्य के साथ ही मंदिरों में सांझी कला के प्रलेखन का काम भी इस वर्ष शुरू कर दिया गया।

ब्रज-नाथद्वारा परियोजना के समन्वयकर्त्ता वृंदावन के श्री चैतन्य प्रेम संस्थान के श्री श्रीवत्स गोस्वामी परियोजना के गहन अध्ययन के लिए निम्नलिखित संस्थाओं तथा विद्वानों से संपर्क साधे हुए है : डा. आर. नाथ, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर; डा. इरफान हबीब, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़; श्री दामोदर सिंह, मणिपुर कला अकादमी, इम्फाल; सुश्री नलिनी ठाकुर, योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, नई दिल्ली; डा. तारापद मुखर्जी (अब दिवंगत) तथा डा. जे.सी. राइट, प्राच्य एवं अफ्रीकी अध्ययन विद्यालय, लंदन। अन्य विदेशी विद्वान जो इस परियोजना में सक्रिय रूप से संलग्न है, वे है : डा. जार्ज मिचल (यूनाइटेड किंगडम), डा. जे.एस. फ्रिल्ब और डा. एलन शैपिरो (संयुक्त राज्य अमेरिका)।

(ii) बृहदीश्वर

तंजवुर स्थित बृहदीश्वर संबंधी परियोजना की संकल्पनात्मक योजना और परियोजना रूपरेखा निम्नलिखित मदों (माड्यूलों) के साथ तैयार की गई है :-

1. गौण स्रोतों से बहुभाषी ग्रंथसूची।
2. पुरालेखों तथा शिलालेखों संबंधी सामग्री।
3. पुरातत्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों का प्रलेखन।
4. मंदिर की मूर्तियों, प्रस्तर कलाकृतियों, कांस्य प्रतिमाओं, भितिचित्रों का अध्ययन।
5. आगमों और कर्मकाण्डों की जीवंत परंपराओं के संदर्भ में वास्तु तथा शिल्प पक्षों का अध्ययन (जिससे जीवंत अस्तित्व का माड्यूल बन सके)।
6. भौतिक एवं मानसिक/अतिभौतिक स्तर से संबंधित अध्ययन, अर्थात् पूजा तथा पर्वों की विभिन्न अवस्थाओं का प्रलेखन।
7. संगीत तथा नृत्य की परंपरा का संपूर्ण सर्वेक्षण, और
8. 18 वीं तथा 19 शताब्दियों के दौरान तंजवुर तथा बृहदीश्वर मंदिर का सामाजिक राजनीतिक तथा पारिस्थितिक इतिहास।

उपर्युक्त माड्यूलों में से दो माड्यूलों यानी (1) बहुभाषी ग्रंथसूची और (2) पुरातत्वीय रेखाचित्रों तथा छायाचित्रों के प्रलेखन का कार्य क्रमशः डा. आर. नागस्वामी और इकोल फ्रैंसेज द एक्सट्रीम ओरिएंट, पांडीचेरी तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किया जा रहा है।

जहां तक बहुभाषी ग्रंथसूची का संबंध है, नई दिल्ली में उपलब्ध साहित्य, जिसमें गजेटियर, पुराने अभिलेख तथा रचनाएं शामिल हैं, का काम पूरा हो चुका है और मद्रास में ऐसा ही काम प्रगति पर है।

प्रो. पिचई के निर्देशन में इकोल फ्रैंसेज द एक्सट्रीम ओरिएंट ने मंदिर की भूतलीय योजना के वास्तुकलात्मक रेखाचित्र तथा मंदिर के दक्षिणी उत्सेध (उठान) ने नक्शे तैयार करना शुरू कर दिया है।

जीवंत अस्तित्व माड्यूल के लिए, मंदिर उत्सव के प्रलेखन कार्य चिदंबरम् मंदिर पर महाशिवरात्रि समारोहों के अध्ययन के साथ शुरू किया गया, क्योंकि बृहदीश्वर मंदिर का निर्माता राजराज चोल भगवान नटराज को अपना कुलदेव मानता था। पूजा के धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में दीक्षितारों के साथ चर्चा करने के लिए चिदंबरम् में एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया।

पूजा तथा पर्वों/उत्सवों के भौतिक तथा अतिभौतिक स्तरों के अध्ययन तथा निर्वचन से संबंधित माड्यूल के लिए सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजवुर की सचित्र पांडुलिपियों के फोटो तैयार किए जा रहे हैं।

इस परियोजना के लिए पांडीचेरी स्थित फ्रेंच संस्थान के अलावा इन संस्थाओं को भी सहयोजित किया गया :-

राष्ट्रीय अभिलेखागार तथा राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली; भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मैसूर, सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजवुर और मद्रास ओरिएंटल लाइब्रेरी, मद्रास।

जिन महत्वपूर्ण विद्वानों से परामर्श लिया गया वे थे :- इकोल फ्रैंसेज द एक्सट्रीम ओरिएंड के डा. पिचई, डा. के.डी. एमेश (पुरालेखीय माड्यूल के लिए), आकाशवाणी, संगीत अनुभाग के श्री बी.एम. सुन्दरम, श्री बी.के. राजमणि (सचित्र पांडुलिपियों के फोटो बनाने के लिए), और डा. कपिला वात्स्यायन (बृहदीश्वर की संकल्पनात्मक योजना के लिए)।

कार्यक्रम ङ : बाल जगत

इस कार्यक्रम का उद्देश्य कठपुतली के खेल, पहेलियों खेलों जैसे विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से बच्चों को जनजातीय तथा ग्रामीण कला की समृद्ध धरोहर से परिचित कराना है जो इस समय उनके स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल नहीं नहीं है।

यह कार्यक्रम भारतीय पुतलि कला की छानबीन के लिए भारतीय साहित्य और अभारतीय पुत्तलिकता संबंधी साहित्य के अवगाहन के साथ प्रारंभ हुआ। इस क्षेत्र के विशेषज्ञों तथा राष्ट्रीय संस्थाओं की सूचियां बनाने का कार्य साथ-साथ हाथ में लिया गया। इंडोनेशिया द्वारा प्रदत्त छाया पुत्तलियों, वायांग कुलित के संपूर्ण प्रलेखन के लिए कुछ और प्रारंभिक कदम उठाए गए।

पुत्तलिका रंगशाला का डिजाइन तैयार करने के लिए पुत्तलिकला के विदेशी विशेषज्ञों के साथ संपर्क स्थापित किए गए। इस कार्य में सहयोजित विदेशी संस्थाएं है :-

(i) इंस्टिटुट इंटरनेशनल डि ला मेरियोनेट्टे, फ्रांस और (ii) मैरियोनेट्टैएटर्न, बुन्सगैटन, स्वेडन। भारतीय संस्थाएं है :-

संगीतनाटक अकादमी, नई दिल्ली; सांस्कृतिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण केन्द्र, नई दिल्ली; कलकत्ता कठपुतली थिएटर, कलकत्ता; दर्पण अकादमी, अहमदाबाद, नटन कैरली, त्रिचुर; आंध्र प्रदेश पुत्तलिकला संघ, हैदराबाद और भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर।

भारत में जिन महत्वपूर्ण साधन संपन्न व्यक्तियों से परामर्श लिया गया वे थे :

कलकत्ता की श्रीमती मेहर आर. कांट्रैक्टर, कलकत्ता के श्री सुरेश दत्ता, नई दिल्ली के श्री दादी पुदुमजी, एस.एम.एम. थिएटर क्राफ्ट्स ट्रस्ट के श्री गोपीकृष्ण, त्रिचुर के श्री जी. वेणु।

इस कार्य में सहयोजित महत्वपूर्ण विदेशी विद्वान ये :-

फ्रांस की श्रीमती मारग्रेट निकुलेस्कू, स्वीडन के श्री मिकैअल मेस्के, इंडोनेशिया के प्रो. आई.बी. मंत्र, फ्रांस के श्री वैक्यूस फेलिक्स, स्पेन की सुश्री कौंधा डिला कासा।

बच्चों को बहुभाषी धरोहर से परिचित कराने के लिए भारत की विभिन्न भाषाओं की अलग-अलग लिपियों पर आधारित पट्ट खेल तैयार करने के लिए प्रयोग किए गए हैं।

बाल जगत परियोजना के अंतर्गत, बहुभाषी वर्णमाला पर आधारित पट्ट खेल तैयार करने के लिए भारतीय प्रौद्योगिक संस्थान, मुंबई के श्री आर.के. जोशी से कहा गया है।

संगोष्ठियों/कार्यशालाओं में भाग लेना

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के एक वरिष्ठ अधिकारी ने उडुपी में 23 मई से 6 जून, 1989 तक हुई लोक साहित्य विदों की कार्यशाला में प्रेक्षक के रूप में भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था – ग्रामीण तथा लोक समुदायों के बहुमाध्यमिक प्रलेखन में अभिलेखागार के महत्व और रीतियोंपर चर्चा करना। पटियाला में मार्च, 1990 में आयोजित 12 वीं भारतीय लोक साहित्य कांग्रेस में भी एक वरिष्ठ अधिकारी ने भाग लिया और 'संथाल संगीत वाद्य का विधक : मानव एवं प्रकृति के संबंध का अध्ययन' शीर्षक से एक शोध-पत्र पढ़ा।

जनपद संपदा प्रभाग के एक अधिकारी ने 'उनिमा' द्वारा बंगलूर में आयोजित पुत्तलिकला विषयक कार्यशाला में भाग लिया।

लोक साहित्य की रक्षा के लिए सदस्य राज्यों को की जाने वाली सिफारिशों का मसौदा तैयार करने के लिए 24-28 अप्रैल, 1989 की पेरिस में हुई यूनेस्को की विशेषज्ञ समिति की बैठक में प्रो. बी.एन. सरस्वती उपस्थित हुए।

IV. कला दर्शन

जैसा कि वर्ष 1987-88 और 1988-89 की रिपोर्टों में बताया गया था, कला दर्शन प्रभाग अपना ध्यान संयोजित विषयों के बहु-आयामी कार्यक्रमों पर केन्द्रित करता है। उसमें ऐसे सार्वकालिक और सार्वदेशिक विषयों का चयन किया है जो प्राचीन समय के शास्त्रों तथा समसामयिक जीवन और सभ्यताओं तथा संस्कृतियों की सीमा से नहीं बंधे हैं। इन विषयों ने एक ओर आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के कारण और दूसरी ओर अपखंडन तथा एक सार्वभौम ग्राम के विरोधाभास के कारण एक नई सार्थकता अर्जित कर ली है। मानव के इन शाश्वत चिन्तनीय विषयों को एक श्रव्य/दृश्य रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता को देखते हुए कला दर्शन ने अंतरिक्ष या 'ख' विषय पर पहली प्रदर्शनी तथा आकाश विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया था। इसी के उपरान्त लिखित लिपि तथा सुलेखन कला विषयक तत्संबंधी परियोजना पर प्रदर्शनियां, संगोष्ठियां तथा कार्यशालाएं आयोजित की गई। 'आकार' विषयक प्रदर्शनी का ब्यौरा वर्ष 1988-89 की वार्षिक रिपोर्ट में दिया गया था।

व्यावहारिक रूप से सभी सभ्यताओं तथा संस्कृतियों एवं सभी शास्त्रों/विषयों जैसे भूविज्ञान, जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, तत्वमीमांसा, गणित, मिथक तथा इतिहास, कलात्मक अभिव्यक्ति तथा अनुभव और सर्वोपरि चेतना, अर्थात् सभी का 'काल' (समय) से संबंध रहा है। हालांकि समय का अध्ययन करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है और भिन्न-भिन्न संदर्भों में इस विषय पर विश्व के अनेक भागों में कुछ संगोष्ठियां भी हो चुकी हैं, फिर भी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र इस विषय पर कुछ इस तरह की एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा प्रदर्शनी आयोजित करने का विचार कर रहा है जिससे कि नानाविध घटनाचक्र के पीछे छिपी एकता की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति हो सके।

विभिन्न विषयों/शास्त्रों के संबंध में कुछ प्रारंभिक कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। राष्ट्रीय विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं विकास अध्ययन संस्थान, जादवपुर विश्वविद्यालय, केन्द्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान और संस्कृत शोध अकादमी, मेलकोटे ने विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियां आयोजित की है। नवंबर 1990 में 'काल' (समय) विषय पर होने

वाली अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, कला इतिहासविदों और अनुभव संपन्न लोगों के भाग लेने की पूरी आशा है। इसमें नोबेल पुरस्कार विजेता इलिया प्रिगोजाइन, जान इक्लीस और परमपावन दलाई लामा, भौतिक विज्ञानी डेविड पार्क, डा. राजा रामन्ना शामिल हैं। डा. जी.सी. पांडे, डा. आर. पणिक्कर जैसे दार्शनिक, डा. आइरीन विंटर, डा. मिकाइल मीस्टर, डा. थामस मैक्सवेल जैसे कला इतिहासविद, डा. कैथलीनि रैने, श्री पीटर मेलकिन जैसे कवियों के भी उपस्थित होने की संभावना है।

V. सूत्रधार

सूत्रधार नीति निर्माण, प्रशासन तथा समन्वय संबंधी कार्यों के लिए प्रमुख प्रभाग है। यही प्रभाग समग्र केन्द्र के लिए सेवा की व्यवस्था करता है।

क. कार्मिक

वर्ष 1988-89 केन्द्र को पुष्टता प्रदान करने का वर्ष था। उस वर्ष के अंत में, न्यास के सेवा में नियुक्त कर्मचारियों की संख्या बढ़ कर 102 हो गई। आलोच्य वर्ष में, केन्द्र द्वारा कार्यान्वित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों को पर्याप्त समर्थन देने के लिए विभिन्न प्रभागों में कार्मिकों की संख्या में वृद्धि करने का कार्य जारी रहा। वर्ष के अंत में, न्यास की सेवा में नियुक्त कर्मचारियों की संख्या बढ़ कर 157 तक पहुंच गई। नए नियुक्त कार्मिकों में विभिन्न विषयों के विद्वान, संपादकीय कार्मिक, वरिष्ठ प्रशासनिक तथा लेखा अधिकारी और निचले स्तर के सहायक कर्मचारी भी थे।

ख. आपूर्ति तथा सेवाएं

वर्ष के दौरान, रखवाली तथा सुरक्षा प्रबंध सहित आवश्यक कार्यालय सेवाओं की व्यवस्था करके के लिए, एक सर्वांगपूर्ण आपूर्ति एवं सेवा शाखा स्थापित की गई।

ग. वाराणसी में शाखा कार्यालय

वाराणसी में 1 अक्तूबर, 1989 को एक शाखा कार्यालय स्थापित किया गया। यह मुख्य रूप से कलातत्वकोश परियोजना से संबंधित कार्य में संलग्न है। कलातत्वकोश पर कार्य करने वाले अधिकांश विद्वान वाराणसी में या उसके आसपास निवास कर रहे है। इसलिए यह वांछनीय समझा गया कि विभिन्न मामलों में उनको सहायता देने के लिए उनके पास ही कोई प्रशासनिक इकाई होनी चाहिए। इस शाखा का नियंत्रण वाराणसी में स्थित एक अवैतनिक समन्वयकर्ता के हाथ में है।

घ. वित्त एवं लेखे

वर्ष के दौरान कर्मचारियों के कल्याण के लिए कई उपाए किए गए। इस प्रकार अंशदायी भविष्य निधि एवं उपदान की एक योजना लागू की गई इसके लिए पहले केन्द्र की भविष्य निधि को विधिवत् मान्यता दिलाई गई और इस संबंध में भारत सरकार की ओर से भविष्य निधि अधिनियम, 1925 की धारा 8(2) व (3) के अंतर्गत अधिसूचना जारी करवाई गई।

केन्द्र की उपविधियां बनाने का कार्य संपन्न हो गया।

भारत सरकार ने केन्द्र को केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना में शामिल होने की अनुमति दे दी। इस संबंध में आवश्यक औपचारिकताएं पूरी की गईं, पैसे की अदायगी कर दी गई और आलोच्य वर्ष के दौरान योजना के अंतर्गत डाक्टरी कार्ड सभी पात्र कर्मचारियों को दे दिए गए।

निर्धारण वर्ष 1989-90 के लिए आयकर अधिनियम की धारा 10(23ग)(4) के अंतर्गत आयकर की अदायगी से मिल सकने वाली छूट केन्द्र द्वारा विधिवत रूप से प्राप्त की गई और निर्धारण वर्ष 1990-91 से 1994-95 तक के लिए भी वह छूट देने के लिए भारत सरकार से अनुरोध किया गया।

ङ. आवास

नियमित कार्योपयुक्त भवनों के अभाव में, केन्द्र सेंट्रल विस्टा मेस भवन में उपलब्ध स्थान का सर्वोत्तम उपयोग करता रहा। किन्तु कार्मिकों की संख्या में वृद्धि होने और कार्यक्रमों की गति बढ़ने के कारण अतिरिक्त स्थान की आवश्यकता महसूस की जाती रही। राजेन्द्र प्रसाद रोड पर स्थित बंगलों नं. 3 जो पहले सतर्कता आयोग के पास था, इस वर्ष केन्द्र को सौंप दिया गया। केन्द्र के दो प्रभागों को उस भवन में स्थानांतरित कर दिया गया।

च. शोधवृत्ति योजना

शोध प्रधान परियोजनाएं हाथ में लेने के लिए अध्येताओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, केन्द्र के अकादमिक प्रभागों में शोधवृत्ति देने की योजना तैयार तथा लागू की गई। विभिन्न प्रभागों की आवश्यकताओं पर भली भांति विचार करने के बाद ही इस योजना को अंतिम रूप दिया गया। इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षणार्थी और कनिष्ठ तथा वरिष्ठ अध्येता नियुक्त करने की व्यवस्था है। प्रशिक्षणार्थी/अध्येताओं को प्रतिमास 1200 रु. से 4000 रु. तक वृत्तिका दी जाएगी। केन्द्र में अध्येताओं की नियुक्ति यथासंभव, इसी योजना के अनुसार होगी।

छ. भवन परियोजना

भवन परिसर के संकल्पनात्मक डिजाइन वास्तुविद द्वारा अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किए गए, और भवन समिति के अध्यक्ष के अनुमोदन से नियुक्त की गई विशेष तकनीकी समिति द्वारा इनकी जांच की गई। सुरक्षा, वाहन विराम स्थल तथा यातायात की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए, वास्तुविद को अपने नक्शों में संशोधन करने को कहा गया। वास्तुविद ने प्रतियोगिता में चुने गए डिजाइन में कुछ फेरबदल करके एक नया नमूना तैयार किया है। उसने अक्तूबर 1989 में तकनीकी समिति के सामने वह नया नमूना (मॉडल) प्रस्तुत किया।

ज. अंतर्राष्ट्रीय संवाद

I. द्विपक्षीय : कला निधि प्रभाग के कार्यक्रमों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत प्राप्त हुई वस्तुओं का उल्लेख किया जा चुका है। जैसा कि वहां कहा गया था, प्राप्त वस्तुओं में उल्लेखनीय है – नीदरलैंड में उपलब्ध संस्कृत पांडुलिपियों की एक सूची तथा उसी सामग्री की एक सौ से अधिक माइक्रोफिश प्रतिलिपियां, जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य से प्राप्त प्राचीन भारतीय साहित्य विषयक पुस्तकें, फ्रांस में उपलब्ध प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय पांडुलिपियों की सूचियों के 37 खंड, बेल्जियम से प्राप्त मिश्र-विद्या पर ग्रंथ सूचियां, हंगरी से प्राप्त एक विद्वत्तापूर्ण संग्रह और इंडोनेशिया से प्राप्त विविध कला विषयक प्रकाशन।

द्विपक्षीय संपर्क के फलस्वरूप जनपद संपदा प्रभाग की कुछ इसी प्रकार लाभान्वित हुआ। उसे फ्रांस तथा स्पेन से पुत्तलिकला विषयक सूचियां प्राप्त हुई। और जगरोव, यूगोस्लाविया से आदिम कला निधि की एक सूची मिली। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों के अंतर्गत, एक फ्रांसीसी विद्वान ने यूनेस्को की ओर से आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया जो 1989 में अंतरासांस्कृतिक जीवन-शैली अध्ययनों पर केन्द्र में आयोजित की गई थीं। बृहदीश्वर मंदिर तंजवुर के अध्ययन और मानव परिस्थिति विज्ञान तथा सांस्कृतिक धरोहर संबंधी कार्यक्रम में दो फ्रांसीसी विद्वानों को सहयोजित किया गया। दो भारतीय विद्वान सोवियत रूस गए। एक विद्वान 'लोक साहित्य तथा समकालीन विश्व' विषयक यूरोपीय परिचर्चा में भाग लेने गया था तो दूसरा केन्द्र द्वारा आदिश्रव्य नामक स्थायी नाद दीर्घा स्थापित करने के कार्यक्रम के संबंध में श्रीलंका संग्रहालय का अध्ययन करने।

II.**बहुपक्षीय** : इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को देश में कला तथा संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में यूनेस्को तथा, यू.एन.डी.पी. से मान्यता प्राप्त हो चुकी है। केन्द्र ने यूनेस्को के सहयोग से कई प्रदर्शनियां तथा कार्यक्रम आयोजित किए। इस प्रकार 1988 में "खं" अर्थात आकाश एवं आकाश का कार्य विषय पर एक प्रदर्शनी और 'विदाकाश - भूताकाश' - आन्तरिक एवं बाह्य आकाश विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी। नवंबर 1988 में, वर्णस्पर्श तथा सुलेखन कला पर एक अंतरसांस्कृतिक प्रदर्शनी 'आकार' का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी के विषय में विस्तृत जानकारी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की 1988-89 की वार्षिक रिपोर्ट में दी जा चुकी है। बहुमाध्यमिक कंप्यूटरीकरणीय प्रलेखन के साथ अंतरसांस्कृतिक जीवन शैली अध्ययनों के विषय पर एक कार्यशाला जनवरी 1989 में की गई। केन्द्र द्वारा 21 खंडीय कला विश्वकोश के निर्माण की एक अकादमिक योजना तैयार करने के लिए मार्च 1989 में एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न की गई। इस कार्यशाला में बहुत से विख्यात भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने भाग लिया। इन सभी कार्यक्रमों के आयोजन में यूनेस्को ने न केवल सहयोग दिया बल्कि आंशिक रूप से उनके वित्तपोषण की भी व्यवस्था की।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव ने अक्तूबर, 1989 में पेरिस में हुए यूनेस्को महासम्मेलन के पच्चीसवें अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उन्होंने छह संकल्प प्रस्तुत किए :

(1) कला तथा सांस्कृतिक धरोहर विश्वकोश के लिए संकल्पनात्मक संरचनाओं तथा मॉडलों के विषय में अंतर्राष्ट्रीय अकादमिक कार्यशाला,

(2) सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित विशिष्ठ सूचना प्रणालियों को सहयोजित करने के लिए दक्षिण तथा दक्षिणपूर्व एशियाई क्षेत्र के सदस्य देशों के विशेषज्ञों की परामर्श बैठक,

(3) जीवन शैली संबंधी अध्ययन की विशिष्ट प्रणालियों का विकास और अनुप्रयोग,

(4)लुप्त हुई सांस्कृतिक संपदाओं की बहुमाध्यमिक सूचियां अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तैयार करना,

(5) विकास के लिए संस्कृति को पुन: परिभाषित करने के लिए विश्वस्तरीय विशेषज्ञ सम्मेलन, और

(6) 'काल' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी। इन संकल्पों में से प्रत्येक को सदस्य राज्यों से भरपूर समर्थन मिला और वे महासम्मेलन द्वारा स्वीकार कर लिए गए। संकल्पों मे उल्लिखित परियोजनाओं के संबंध में अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है।

केन्द्र के लिए एक सांस्कृतिक संसाधनों के प्रलेखन तथा बहुमाध्यमिक सूचना की प्रणाली स्थापित करने के लिए एक परियोजना का प्रस्ताव यू.एन.डी.पी. की वित्तीय सहायता से तैयार किया जा रहा है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

अफसरों की तालिका

डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन — सदस्य सचिव

कलानिधि प्रभाग

कलानिधि (क)

1.	डॉ. टी.ए.वी. मूर्ति	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	डॉ. उत्पल के. बैनर्जी	राष्ट्रीय प्रोजेक्ट निदेशक
3.	श्री आत्म प्रकाशन गक्खड़	उप पुस्तकालयाध्यक्ष
4.	श्री एन.आर.आर. वारी	वरिष्ठ रिप्रोग्राफिक अफसर
5.	श्री अशोक कुमार भटनागर	रिप्रोग्राफिक अफसर
6.	श्री विकास कुमार भट्टाचार्य	ग्रंथ सूचीकार
7.	श्री ऋषि पाल गुप्त	प्रशासन अधिकारी

कलानिधि (ख)

8.	डॉ. बी.सी. कैले	इन्चार्ज, कम्प्यूटर सेल

कलानिधि (ग)

9.	(कु.) सरस्वती स्वामिनाथन	अनुसन्धान अधिकारी

कलाकोश प्रभाग

मुख्यालय

1.	डॉ. सम्पत नारायणन	समन्वयक
2.	डॉ. ललित मोहन गुजराल	परामर्शदाता
3.	श्री मनोहर लाल चोपड़ा	परामर्शदाता
4.	डॉ. चन्द्रभान पाण्डेय	सम्पादक
5.	डॉ. नारायण दत्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी
6.	श्री शुभ दत्त डोगरा	सहायक सम्पादक
7.	श्री राम गोविन्द मुखोपाध्याय	प्रशासन अधिकारी
8.	श्री गोपाल दास शर्मा	अनुभाग अधिकारी

वाराणसी आफिस

1.	डॉ. वेट्टिना बॉमर	अवैतनिक समन्वयक
2.	पं. हेमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती	प्रधान पण्डित
3.	डॉ. (कु.) सुषमा पाण्डेय	अनुसन्धान अधिकारी
4.	डॉ. (कु.) उर्मिला शर्मा	अनुसन्धान अधिकारी
5.	डॉ. सुकुमार चट्टोपाध्याय	अनुसन्धान अधिकारी

जनपद सम्पदा प्रभाग

1.	प्रो. वैद्यनाथ सरस्वती	अनुसन्धान प्राफेसर
2.	(कु.) कृष्णा दत्त	समन्वयक
3.	डॉ. (कु.) कनक मीतल	अनुसन्धान अधिकारी
4.	डॉ. अजय प्रताप	अनुसन्धान अधिकारी
5.	श्री राम गोविन्द मुखोपाध्याय	प्रशासन अधिकारी

कला दर्शन प्रभाग

1.	श्री वसन्त कुमार	संयुक्त सचिव
2.	श्री श्यामल कृष्ण सरकार	निदेशक

सूत्रधार प्रभाग

1.	श्री सत्य पाल जोशी	संयुक्त सचिव
2.	श्री वी. रघुराम अय्यर	निदेशक
3.	श्री एम. वेंकटेश्वर अय्यर	निदेशक
4.	श्री सिंह राज जयराथ	मुख्य लेखा अधिकारी
5.	श्री सुदर्शन कुमार अरोड़ा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
6.	श्री ओम प्रकाश गोयल	वरिष्ठ लेखा अधिकारी
7.	श्री ज्योति स्वरूप पांडे	उप सचिव
8.	श्री रतन चन्द सूद	प्रशासन अधिकारी
9.	श्री ओम प्रकाश रेहॉन	प्रशासन अधिकारी
10.	श्री पी. परमेश्वरन	अनुभाग अधिकारी
11.	श्री परमानंद गिरधर	अनुभाग अधिकारी
12.	श्री सुरेन्द्र नाथ कौला	अनुभाग अधिकारी